श्री इचलकरंजी नगरे

चातुर्मास हेतु भव्यातिभव्य नगर प्रवेश

आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्य
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा.

पावन सानिध्य

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया माताजी म. श्री रत्नमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.,
पूजनीया डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा., पूजनीया साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा.,
पूजनीया साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा., पूजनीया साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.,
पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा., पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा.

चातुर्मास स्थल
मणिधारी भवन,
श्रीपाद नगर,
इचलकरंजी

चातुर्मास प्रवेश शुभ मुहूर्त
वीर सं. 2540 वि.सं. 2071
आषाढ सुदि द्वितीय अष्टमी
रविवार ता. 6 जुलाई 2014
प्रात: 8 बजे

सकल श्री संघ से इस पावन अवसर पर पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

चातुर्मास आयोजक
श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ
श्रीपाद नगर, चांदनी चौक, इचलकरंजी- 416115 महाराष्ट्र
फोन- 0230 2420700

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला का मासिक मुख-पत्र

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 3 ▪ ▪ 5 जून : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

ॐ ह्रीं अर्हं नम:
दादागुरुदेव श्री जिनदत्त-कुशल गुरूभ्यो नम:
प.पू. गणनायक सुखसागर सदगुरूभ्यो नम:

प्रसंग है चातुर्मास का- धर्म आराधना के सहवास का

भारत देश की राजधानी दिल्ली महानगर में प्रथम बार परम पूज्या दक्षिण प्रभाविका गणरत्ना पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरूवर्या **श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा.** आदि ठाणा के चातुर्मास हेतु भव्यातिभव्य मांगलिक प्रवेश

शुभ दिवस आषाढ सुदि 2 ता. 29 6. 2014 रविवार

दिव्य कृपावृष्टि
परम पूज्य
खरतरगच्छाधिपति
आचार्य भगवंत
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा.
परम पूज्य प्रवर्तिनी महोदया श्री प्रेमश्रीजी म. सा.
परम पूज्या गुरुवर्या श्री तेजश्रीजी म. सा.

आज्ञा प्रदाता
परम पूज्य आचार्य भगवंत
श्री जिनकैलाशसागर
सूरीश्वरजी म. सा.

आशीर्वाद अमीवर्षा
परम पूज्य मरूधर मणि उपाध्याय भगवंत
श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

चातुर्मास पावन निश्रा
परम पूज्या दक्षिण प्रभाविका गणरत्ना पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरूवर्या
श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-9

मंगलमय कार्यक्रम

ता. 29. 6. 2014 को प्रात: गाजे बाजे भव्य स्वागत के साथ 9 बजे मंगल प्रवेश
तत्पश्चात् धर्मसभा अभिनंदन समारोह व साधर्मिक वात्सल्य

विशेष:- परम पूज्या तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास छोटी दादावाडी में होगा।

चातुर्मास स्थल
श्री जैन खरतरगच्छ समाज
1945, कच्चा कटरा,
कटरा खुशालराय, किनारी बाजार
पो. दिल्ली - 110006
मो. 09903461591, 9932203456, 9312729505

विनीत
श्री जैन खरतरगच्छ समाज, दिल्ली

अपूर्व आनन्द

हमारे परिवार को श्री कुशल वाटिका-पाल (सुरत) में परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं गृह मंदिर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिराजमान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे हम सभी परिवारजन आनन्दित है

परम पूज्य गुरूदेव मरूधर मणि उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. को 42वें संयमवर्ष प्रवेश पर शतशः वंदना

आप दीर्घायु हो...

शासन की अद्भुत प्रभावना करें...

हम है आपके

श्री वनेचंदजी लालचंदजी मंडोवरा परिवार

होडु–सिणधरी–सुरत

आगम मंजूषा

परमात्मा महावीर

सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढीपमाणं,
आहारे, आलंबणं, चक्खु।

- उपासक दशा १/५

गृहस्थ को अपने परिवार में मेढीभूत (स्तंभ के समान उत्तरदायित्व वहन करने वाला), आधार, आलंबन और चक्षु अर्थात पथ-प्रदर्शक बनना चाहिये।

भावभरा नमन

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा.
की 860 वीं पुण्यतिथि
आषाढ़ सुदि 11, मंगलवार ता.8 जुलाई 2014

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4. तीन सवाल	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	09
5 .मेरी आस्था के केन्द्र पूज्यश्री	रमेश मालू, बाड़मेर	11
6. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
7. तत्त्वावबोध	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	18
8. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	20
9. गुरु की महत्ता	मुमुक्षु शुभम लूंकड़	22
10. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	24
11. समाचार दर्शन	संकलन	25-43
12. साधु-साध्वी समाचार	संकलन	44-45
13. जहाज मंदिर पहेली 95 का सही उत्तर		46
14. जहाज मंदिर पहेली 96 का सही उत्तर		46
15. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-98	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	47
16. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	50

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 3 5 जून 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

होश के साथ जीयें

तीन शब्द बडे महत्वपूर्ण है-

1. असावधानी 2. सावधानी 3. होश

असावधानी का अर्थ है- जो काम व्यक्ति कर रहा है, उस समय उस कार्य में उसके मन की अनुपस्थिति होना।

हो रहे कार्य में मन की जागरूकता, सावधानी की परिभाषा है।

जीवन की सामान्य गतिविधियों के प्रति व्यक्ति प्राय: असावधान हो जाता है। बहुत सारी घटनाऐं असावधानी अर्थात् बेहोशी के साथ होती है। व्यक्ति प्रतिक्षण श्वास नि:श्वास की क्रिया करता है, पर उसके प्रति कभी जागरूक नहीं होता। विचारों में डुबकी लगाता हुआ बहुत सारे कार्य करता है। वे सब असावधानी के क्षण हैं।

कुछ काम सावधानी से भी करता है। भोजन करता है, तब कुछ क्षण ऐसे आ सकते हैं, जब वह थोडा सावधान हो। वार्तालाप करते समय भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से होशियार रहता है।

पर व्यक्ति यह सब होशियारी, सावधानी, शरीर और शरीर से जुडी व्यवस्था के संदर्भ में रखता है। सावधान अपने आप में बहुत बडा गुण नहीं है। क्योंकि चोर भी जब चोरी करता है, तो वह बहुत सावधान रहता है। सावधान किस कार्य के प्रति है, उस आधार पर निर्णय होता है कि सावधानी गुण है या दुर्गुण!

अपनी आन्तरिक चेतना के संबंध में जागरूकता परम सद्गुण है। यह आन्तरिक जागरूकता होश कहलाती है।

व्यक्ति या तो असावधानी से जीता है या सावधानी से! पर होश से नहीं जीता। होश पूर्वक जीने का अर्थ है- परिणाम का विचार करके अपने जीवन का निर्धारण करना।

वह केवल अपने वर्तमान की सुख सुविधा नहीं देखता। वह भविष्य के अनुसार अपने वर्तमान का निर्माण करता है।

हमें जीवन मात्र सावधानी से नहीं, अपितु होश के साथ जीना है।

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

गुरूदेव की कहानियाँ

श्रद्धा का अभिषेक

सेठानी की नींद अचानक उचट गयी। उसने धीमी चाल की आवाज सुनी और शय्या पर से उठ खड़ी हुई। उसने देखा- एक परछांई अन्दर आ रही है।

भय की ठंडी लहर उसके सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो गयी। वह चीखना ही चाहती थी, इतने में सोचा- क्या पता ये कितने लोग हैं ?अगर चीख सुनकर ये क्रोधित हो गये तो हमारे पूरे घर को जलाकर भस्म कर देंगे। अच्छा यही है कि मैं चुपचाप सो जाऊं।

कुछ ही देर के बाद कुछ आवाज सुनकर सेठजी की भी नींद खुल गयी। उन्होंने स्पष्ट देखा- एक आकृति ऊपर से होकर नीचे आ रही है। सेठजी का स्वभाव कुछ अलग किस्म का था। करुणा उनके रोएँ-रोएँ से बरस रही थी। संतान के अभाव ने उन्हें और भी दयालु और उदार बना दिया था।

वे जल्दी से शय्या से नीचे उतरे और कमरे का दरवाजा खोल दिया और चुपचाप जैसे कुछ देखा ही न हो ऐसे सो गये।

नींद आँखों से गायब हो गयी। सोचने लगे- कितना परिस्थितियों का मारा होगा?पता नहीं कितना दु:खी और सन्तप्त होगा?बिचारा गरीबी से तंग आकर ही यह उल्टा धंधा करना सीखा होगा। ले जाने दो कुछ माल इसको भी।

चोर ने दरवाजा खुला देखा और सोचने लगा- अगर यहाँ से मैं कुछ ले गया तो वह चोरी नहीं कहलायेगी। चोरी करना तो तभी सार्थक होता है जब श्रेष्ठ चौर्यकला का कुछ उपयोग हो। यह सोचकर चोर उल्टे पाँव वापस लौट गया।

सेठ ने देखा वह कुछ भी नहीं ले गया तो उसे आश्चर्य हुआ। दूसरे दिन उसने तिजोरी का दरवाजा भी खुला छोड़ दिया ताकि वह आगंतुक निराश न लौटे।

परन्तु चोर भी अजीब मानसिक स्थिति वाला था, उसने भी सोच रखा था कि चोरी करनी तो अपनी कला दिखाने के पश्चात्।

प्रात: सेठ ने देखा-तिजोरी जैसी की तैसी पड़ी है। उसे चोर के प्रति एक अनजाना लगाव पैदा हो गया। उसने सोचा निश्चित ही यह किसी उच्च खानदान का चिराग है। परिस्थितियों का मारा यह इस गलत धन्धो में फँस गया है। इसे मैं अवश्य ही बदल दूँगा।

अगले दिन घर के सदस्यों के सोने के पश्चात् स्वर्ण-मुद्रिकाओं से भरी थैली बाहर चबूतरे पर रख दी ताकि उस विचित्र चोर को कुछ प्राप्त हो सके। सेठ भी एक कोने में छिपकर बैठ गया। चोर आया पर सेठ को यह देखकर गहरा आश्चर्य हुआ कि वह थैली को दूर से ही देखकर रवाना हो गया।

सेठ गहरे चिंतन में डूब गया। उन्हें चोर का व्यवहार एक पहेली की तरह लग रहा था। वह चोरी करने के लिए आता जरूर है पर मेरे द्वारा दी गयी सुविधा का भी फायदा नहीं उठाना चाहता। जरूर यह कुछ विचित्र किस्म का चोर है। धन से भी ज्यादा भावनाओं को महत्त्व देता है। अगर उसके स्थान पर कोई अन्य होता तो वह कभी भी इन हाथ आये अनमोल अवसरों को नहीं चूकता।

(क्रमश:)

प्रीत की रीत

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री पद्मप्रभस्वामी स्तवन

आज विज्ञान ने भी इस प्रकार के उपकरणों का निर्माण कर दिया है जिसके आधार पर आभामंडल को देखा जा सकता है। अपराधी की खोज में इस प्रकार के उपकरणों का उपयोग होता है। व्यक्ति को मशीन के सामने बैठा देते हैं, यंत्र की सुई घूमती रहती है, ग्राफ उतर आता है और उसी से तय हो जाता है कि व्यक्ति कैसा है?इसमें तो फिर भी धोखे की संभावना रहती है क्योंकि व्यक्ति के मानसिक भाव बदल भी सकते हैं परन्तु व्यक्ति के आभामण्डल में धोखा होने की कोई संभावना नहीं रहती।

हमारे सूक्ष्म जगत में घटित होने वाले समस्त निर्देशों को आभामंडल लाता है। मन जब कुछ सोचता है तब चित्र बनता है, मन: पर्यवज्ञानी हमारे मन में उभरने वाले भावों के चित्र को तुरंत ही पढ़ लेते हैं। व्यक्ति जो जैसा सोचता है तत्काल ही वे चित्र के रूप में आकाश में फैल जाते हैं। शताब्दियों के बाद भी एक मन: पर्यवज्ञानी विचारों द्वारा आकाशमंडल में फैंके उन चित्रों को जान सकता है, पढ़ सकता है और उसे बता भी सकता है कि अमुक समय में उसने यह विचार किया था।

यहाँ श्रीमद्जी परमात्मा के आभामंडल को, उनके रक्तवर्ण को स्वयं के इन्द्रियों के संवर में उपयोगी मानते हैं। परमात्मा की साधना से शुद्ध बने आभामंडल में प्रवेश करते ही पापी व्यक्ति के अध्यवसाय भी पवित्र बन जाते हैं। भावों का शोधन और निर्मलीकरण हो जाता है। एक विज्ञान का यंत्र जब चूहे और बिल्ली को एक साथ रख सकता है तो परमात्मा की करूणा हमारे मलीन आभामंडल की शुद्धि करे तो उसमें अचरज ही क्या है?

भक्त आत्मा अपना रूपान्तरण करना चाहता है पर रूपान्तरण ऐसे ही संभव नहीं है, उसे रंगों का सहारा लेना पड़ता है। रंग स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही व्यक्ति को प्रभावित करते हैं। यदि भक्त रंगों के प्रभाव को समझ लेता है तो उसे अपना रूपांतरण करने में सहयोग मिल जाता है।

अगर हम काले रंग के आभामण्डल अथवा नीचे और कापोत रंग के आभामण्डल मे जाकर बैठते हैं तो अपनी इन्द्रियों पर कभी नियंत्रण नहीं कर सकते। यहाँ हमारा पुरुषार्थ भी गौण हो जाता है जब कभी पुरुषार्थ करते हुए भी विपरीत परिणाम नजर आते हैं तो हमें अपने संपर्क को टटोलना चाहिये। अगर हम अशुद्ध आभामंडल के संपर्क में है तो एक ओर तो हमारा शुद्ध पुरुषार्थ चल रहा है दूसरी ओर हमारा संपर्क, हमारे विचार काले, नीले और पीले परमाणुओं द्वारा आकृष्ट हो रहे हैं तो निश्चित ही इन अशुद्ध परमाणुओं का शुभ पुरुषार्थ पर ऐसा आक्रमण होगा कि वह पुरुषार्थ असफल हो जायेगा।

जितेन्द्रिय बनने के लिये हमें परमात्मा के अरूपी स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। वैसे पद्मप्रभु की तीर्थंकर अवस्था का रंग रक्त था। श्रीमद्जी को यह रक्त वर्ण जितेन्द्रिय होने के लिये उपयोगी नजर आता है। साथ ही अंतिम पंक्ति में यह भी सिद्ध कर दिया है कि वे सिद्धावस्था में अर्थात् वर्तमान में अरूपी है।

(क्रमश:)

चातुर्मास

तीन सवाल

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

- चातुर्मास क्या है?
- चातुर्मास का महत्व क्यों है?
- चातुर्मास की साधना कैसे करें?

इन प्रश्नों की क्रमिक एवं लम्बी शृंखला प्राय: हर मस्तिष्क को उलझाती रहती है।

आईये: इन प्रश्नों की उष्णता से राहत पाने के लिये हम चिन्तन की धारा में नहाये! उलझनों की धूप से बचने के लिये सुलझन की छाया में बैठे!

- चातुर्मास क्या है?

चातुर्मास क्या है? कोई यदि ऐसा प्रश्न करे तो कहना पड़ेगा...

- आत्मा की बेटरी को वर्षभर के लिये तप की उष्मा से चार्ज करने वाला Power house
- अनादि काल से चेतना पर लगे कुसंस्कारों के दाग को धोने वाला Soap
- क्रोध-मान-माया-लोभ रूपी रोगों से मुक्त करके अनन्त स्वास्थ्य का लाभ देने वाला Doctor
- ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपी रंग-बिरंगे महकते आत्म गुणों के पुष्पों की सुरभि फैलाने वाला Garden
- अपने अन्तर में प्रवेश करके अपनी जीवन-पोथी पढ़ाने वाली University
- चारों गतियों के भंवरजाल में भटक रहे गोताखोर से मोक्ष रूपी तट पर ले जाने वाली Ship
- संसार के सकल बंधनों से ऊपर उठकर आत्मा के उन्मुक्त गगन में सैर करवाने वाला दिव्य Aero Plane
- कषायों के बीहड़ डरावने एवं कंटकवन से निकालकर निजता के उपवन में ले जाने वाला Highway
- अज्ञानता के अंधेरे को चीरकर व ज्ञान की किरण ने जीवन को जगमग करने वाला Sun
- अपने अतीत को जानकर, वर्तमान को बदलकर, भविष्य को संवारने वाली Library
- अन्तर की गलतियों को देश निकाला देकर पवित्र चरित्र का तोहफा देने वाला Friend
- दूषण के सारे कीड़ों को समाप्त करने वाला Clinic
- धर्म, ध्यान और धैर्य रूपी विशिष्ट वस्तुओं का विक्रय करने वाला Main Market
- ईर्ष्या के दावानल से बाहर निकलकर शांति, सुख और सुकुन की शीतलता देने वाली River
- अपने जीवन के रजिस्टर में विचार, व्यवहार और आचार की Entries लिखकर लाभ-हानि का सही-सही ब्यौरा प्रस्तुत करने वाला Accountant
- सरलता, समता, सहनशीलता, स्नेहार्द्रता रूपी धन की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि की गारन्टी देने वाली National Bank
- संयम और साधना के सुन्दर वस्त्र धारण करके अन्तरात्मा में आनंदित होने का अलौकिक Festival
- चार माह तक गुरुभगवंतों के अमृत प्रवचनों पर थिरकने वाला Music
- रात्रि भोजन, कंदमूल भक्षण एवं अभक्ष्य पदार्थों के त्याग की प्रेरणा देने वाला Teacher
- मन, जीवन और समय के समुचित प्रबन्धन की कला सिखाने वाला Session
- 'खणं जाणहि पंडिए' इस सूत्र के साथ क्षण-क्षण को तथा समय के साथ चलने की हित शिक्षा देने वाला Golden Watch
- अपनी बुराईयों को दिखाकर आत्म-श्रृंगार की प्रेरणा देने वाला Mirror
- पहले प्रश्न का उत्तर यहाँ परिपूर्ण होता है। उससे अगले का उत्तर अंक में पढ़ेंगे। (क्रमश:)

श्री पार्श्वमणि पार्श्वनाथाय नमः

पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

पूज्य गुरूदेव
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

परम पूज्य आस्था केन्द्र,
वात्सल्य वारिधि, मरूधर मणि
उपाध्याय भगवंत
गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
का
42 वां दीक्षा दिवस आषाढ वदि सप्तमी (7)
दिनांक 19 जून 2014
एवं

परम पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका,
गणरत्ना दक्षिण प्रभाविका गुरूवर्या
श्री सुलोचना श्रीजी म.सा.
के दीक्षा के 52 वें वर्ष पूर्ण एवं 53 वें वर्ष में
प्रवेश पर आषाढ वदि षष्ठी (6)
दिनांक 18 जून 2014

सुलोचना श्रीजी म.सा.

हार्दिक अभिवंदना - अभिनन्दना
भाव सहित अर्चना

चिन्मय ज्योतिर्मय आपका, जीवन अमरता का संगीत ।
क्षमाशील करूणारस भावित, मानवता का मधुमय मीत ।।
संयम का सौन्दर्य कण-कण में उल्लास बिखेरता है।
गुरूदेव का मंगल सानिध्य ज्ञान चेतना को अलंकृत करता है।।

सादर समर्पित गुरू भक्त
पारसमल सौ. रतनाबाई गुलेच्छा
C/o आर. पारसमल जैन
4/30 बाजार स्ट्रीट, पोस्ट विरंचीपुरम - 632104
जिला वैलूर (तमिलनाडू) फोन : 0416-2272358 मोबाइल : 9486051597

बधाई

रमेश मालू, बाड़मेर

मेरी आस्था के केन्द्र गुरुदेवश्री को बधाई

कृति जिनकी कल्याणकारी है।
आकृति जिनकी आह्लादकारी है।
प्रकृति जिनकी प्रेम क्यारी है।
ऐसे अनंत गुणों के धारी,
स्वीकारों गुरुदेव जन्म-दिवस की
ढ़ेर सारी बधाईयां हमारी।

सृष्टि की सुन्दर फुलवारी में अनेक जीव जन्म लेते है। लेकिन उसी का जीवन सार्थक है जिनका आकर्षक व्यक्तित्व सदैव दूसरों के जीवन को नयी और सही राह दिखाता है। जो सत्य अहिंसा, प्रेम, सदाचार जैसे उच्चतम संस्कारों का अद्भूत खजाना हो।

जो प्रमाद की गाढ़ निद्रा से जागृत करके कर्तव्य की राह पर आगे बढ़ने का मार्गदर्शन देते है, जो जीवन जीने की कला का अपूर्व बोध कराते है, जो अपने जीवन को उज्ज्वल बनाने के साथ दूसरों का भी जीवन उज्ज्वल करते हैं ऐसे अमूल्य रत्नों में एक रत्न है पूज्य गुरुदेव, मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.।

आज मुझे परम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। मेरा हृदय हर्ष की तरंगों से तरंगित हो रहा है। सच में मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे शांत, दांत, सरल और गंभीर गुरुदेवश्री के 42वें संयम वर्ष प्रवेश के सन्दर्भ में कुछ शब्द लिखने का सौभाग्य मिला।

नौका कितनी भी अच्छी हो, परन्तु यदि नौका का नाविक बराबर न हो तो, नौका बीच समन्दर में डुब जायेगी। विमान कितना ही अच्छा हो यदि विमान का पायलट सावधान न हो तो बड़ी दुर्घटना घट जायेगी। उसी तरह यदि हमारी जीवन नैया का नाविक बराबर न हो तो जीवन नैया संसार समुद्र को पार नहीं कर पायेगी। तो गुरुदेवश्री मेरी जीवन नैया के नाविक है।

गुरुदेवश्री का जीवन ही उनका संदेश है। गुरुदेव श्री के स्वभाव की तुलना किसके साथ की जाये। चांद की कला से, सागर की गंभीरता से, तारों की टिमटिमाहट से या बादलों की गर्जना से। जितनी तुलना की जाय उतनी कम है।

गुरुदेवश्री की वाणी, विचार और जीवन का प्रत्येक व्यवहार सरल है सहज है।

मैं गुरुदेवश्रीजी के संयम वर्ष प्रवेश पर दादा गुरुदेव से प्रार्थना करता हूं कि गुरुदेवश्री चिरायु हो, गुरुदेवश्री का वरदहस्त मेरे सिर पर बना रहे।

इसी मंगल भावना के साथ पुनः गुरुदेवश्री को संयम वर्ष प्रवेश की खुब-खुब बधाईयां।

कल्याणकारी ही आपका च्यवन,
मंगलकारी है आपका जन्म।
पावनकारी है आपकी प्रव्रज्या,
प्रेरणादायी है आपका व्यक्तित्व।

मांगीलाल मालू
093747 13889,
081288 20000

जितेन्द्र मालू
093759 60465,
081288 30000

शा. मांगीलाल-विमला

जितेन्द्र-सीमा,

मनीष-ज्योति, कपिल-मंजू,

पौत्र : रजत, प्रशांत

बेटा-पोता आसुलालजी गोपचन्दजी मालू,

चौहटन-बाड़मेर-सुरत

Firm

RAMDEV CORPORATION

H - 2550, R.K.P.M., Ring Road
SURAT (GUJ.)
Phone : (0261) 2322025, 2352025

20
श्रमण
चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संसार : रोगों की कतार

गतांक से आगे...

मुने! तूं यह क्या कह रहा है?

गृहवासी बनने का विचार!

संयम त्याग का विकार!

छोड़ दे इन महापापमय विचारों को!

दीक्षा कोई सामान्य चीज नहीं!

दीक्षा के लिये चक्रवर्ती तरसते हैं...

संयम के लिये नर-नरेन्द्र तड़फते हैं...

प्रवज्या के लिये सेठ-साहूकर आँसू बहाते हैं...

इस संयम के महावन में जाने के लिये आदिपुत्री सती सुंदरी ने साठ हजार वर्षों तक आयम्बिल की तपश्चर्या की...!

दीक्षा के लिये अतिमुक्तक ने एक दिन के लिये राजसिंहासन स्वीकारा...।

मुनिपद में खुद का न्यास करने के लिये गजसुकुमाल ने वासुदेव श्रीकृष्ण से तर्क-वितर्क किये....!

यह कोई सामान्य मार्ग नहीं, मोक्ष महल में ले जाने वाला महामार्ग है...

दीक्षा अर्थात्

- साधनों के अभाव में भी समृद्धि का जीवन!
- प्रतिकूलता में अनुकूलता का दिव्य अहसास!
- कर्म मुक्ति की अमोघ युक्ति!
- आठों कर्मों पर जीत का मंगल शंखनाद!
- सिद्ध-पद प्राप्ति का महामिशन!
- समस्त इच्छाओं का अन्तिम संस्कार!
- अन्तर में उतरने की स्वर्ण सीढ़ी!
- पर्यावरण संरक्षण का प्राकृतिक विधान!
- प्राणी मात्र को अभयदान की दानशाला!
- अठारह पाप स्थानक सेवन का सूर्यास्त!

तूं देख! शास्त्रकार इसकी महिमा का संगान किस प्रकार करते हैं।

ते धण्णा कय पुण्णा, जणणी जण्णोदय समयवग्गो याजेसिं कुलंमि जायए, चरित्तधरो महापुत्तो॥

वह माता धन्य है...

वे पिता धन्य है...

वे स्वजन धन्य है...

जिनके कुल में चारित्रग्राही पुत्र रत्न जन्म लेता है।

साधु तूं याद रख !

देवलोक में देवता सुखी नहीं है। देव तो क्या वह देवेन्द्र भी सुखी नहीं है जिसके पास बत्तीस लाख देव विमान, अतुलनीय भौतिक संपदा है।

पृथ्वीपति राजा-महाराजा सुखी नहीं है जो विशाल हय-गय-रथ दल के अधिपति हैं।

हजारों-लाखों सैनिकों का स्वामी सेनापति सुखी नहीं है। मुने! इस दुनिया में कोई भी एकान्त सुखी नहीं है। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के पास छह खण्ड थे पर आँखें नहीं थी। मम्मण सेठ के पास महावैभव था पर महा दुःखी था। आज भी तुम देख सकते हो कि जिसके पास...

धन है पर स्वास्थ्य नहीं है।

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

स्वास्थ्य है पर पुत्र नहीं है।

पुत्र है पर आज्ञाहीन है।

पुत्र आज्ञान्वित है पर नौकरी नहीं है।

सब कुछ ठीक है तो बुढ़ापा सता रहा है। मृत्यु का भय दु:खी कर रहा है।

इस संसार में सम्पूर्ण रूप से एकमात्र वीतरागी साधु ही सुखी है। क्योंकि उसे कोई अपेक्षा नहीं है अत: कोई भय भी नहीं है।

शिष्य! तूं यहाँ महाराजा का जीवन जी रहा है और घर जाकर भिखारी बनना चाह रहा है।

सोच! तूं यहाँ जो आराधना कर रहा है। बेमन ही सही पर जो पाप-मुक्त जीवन जी रहा है उस कारण हजारों रोगों का शमन हो जाता है। अशुभ एवं अशाता वेदनीय कर्म की विपुल निर्जरा होती है। वहां तूं जायेगा तो जो कर्म अनुदयवर्ती हैं, उपशमित हैं वे उदयावलिका में आकर तेरे शरीर को छलनी छलनी कर देंगे।

इस दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका के नवम सूत्र को देख!

न केवल देख अपितु उस पर गहन चिन्तन-मनन कर!

'आयंके से वहाय होइ।'

मुनि! तूं घर पर जायेगा पर वहाँ सुखी जीवन की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है।

अहिंसा से शाता और समाधि का जीवन मिलता है। हिंसा से अशाता और असमाधि का जीवन मिलता है। साधु जीवन अहिंसा का विधान है, करूणा का प्रयोग है, जीवंत साधना है। इस साधना के कारण ही प्राय: मुनि जीवन में परम समाधि में बीतता है परन्तु गृहस्थ जीवन में बहुत कम क्षण शातामय होते हैं।

एक रोग मिटा नहीं कि दूसरे रोग की पीड़ा।

मलेरिया के ठीक होते होते उदरशूल उत्पन्न हो जाता है। केंसर का निदान हो, उससे पहले ही मधुमेह जैसी जानलेवा बीमारियों का आक्रमण हो जाता है।

जुकाम, सर्दी-खांसी, सिरदर्द, घुटना-दर्द, भगंदर, दृष्टिदोष, खुजली आदि रोग ही नहीं, दमा, मलेरिया, टाईफाईड, कर्क रोग (कैंसर), रक्तचाप (बी.पी.), मधुमेह (डायबीटिज) जैसी भारी बीमारियाँ भी साधारण रूप धारण कर चुकी हैं।

वहाँ प्रतिपल आतंक रहेगा। पाप करेगा और तुरन्त फल मिल जायेगा।

शारीरिक पाप रूप व्यभिचार, अबह्मचर्य सेवन, व्यसन-सेवन, तेरी कायिक-संपदा को नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे और मानसिक पाप रूप क्रोध, माया, घृणा, चापलूसी, द्वेष, निंदा जैसे पापों के दुष्परिणाम तेरे जीवन पर क्रूर दृष्टि करते हुए तेरी सारी समाधि, शांति और शाता का हरण कर लेंगे।

तूं रात्रि भोजन करेगा, कदाच् भोजन में बाल आ गया तो स्वर भंग हो जायेगा, बिच्छु आ गया तो तालु का छेदन-भेदन हो जायेगा। मक्खी आ गयी तो वमन होगा, इससे अधिक कभी कोई विषैला प्राणी (सर्प आदि) उसमें गिर गया तो उस भोजन से प्राणों का ही अन्त हो जायेगा।

व्यापारिक अनीति, घोटाले, मिलावट, रिश्वतखोरी, जालसाजी का धन तुझे सुख से जीने नहीं देगा! अनीति के पांचसौ रुपये शरीर में भयंकर महारोग का रूप धारण करके न केवल तेरी संपदा को विपदा में बदलेंगे अपितु हृदय के सुकून की हत्या कर देंगे। वहां कदम कदम हो रही हिंसा के कारण महाकर्मबंध होगा जो तुझे भवोभव सुखी नहीं होने देगा।

यहाँ पग-पग पर जयणा, अहिंसा, दया और कोमलता के दिव्य संस्कार तेरे मन को शांत, तन को निरोगी, विचारों को पवित्र, आचार को निर्मल एवं व्यवहार को प्रामाणिक बनाये रखते हैं।

संसार में जब कभी तीव्र अशाता में भयंकर असमाधि तुझे चारों ओर से घेर लेगी तब तुझे समाधि में कौन स्थिर करेगा? कौन पाप कर्मों की जालिम सत्ता से रूबरू करवायेगा? कौन तेरी आँखों से बहती चौधार अश्रुधार को रोकेगा? कौन तुझे सान्त्वना एवं शांति का महामंत्र सुनायेगा?

Diploma®
Metal Industries
For Better Cooking & Economy

Mfg. Of Stainless Steel Utensils
B-7, RAVI ESTATE, AMBIKA NAGAR, ODHAV
Ahmedabad-382415 (Gujarat)
B.L.Bothra 09426170801 Ramesh 09427031294
Jitesh 09427031295 Sunil 09429021264

और उस समय यदि तुझे समाधि का सूत्र हाथ नहीं लगा, आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान वर्धमान होते गये तो तेरे सामने, भवोभव की दुर्गति-दुर्मति के अनुबंध की भयावह परम्परा खड़ी हो जायेगी। फिर पापानुबंधी पाप तेरे जीवन को और अधिकाधिक पापमय एवं दु:खमय बनाते रहेंगे।

इस दुर्गति की परम्परा को यदि रोकना है तो एक ही उपाय है, वह है- गृहवासी बनने के कुविचार का त्याग एवं संयम मार्ग में स्थिरता का योग।

ए नादान अबोध मुने। तूं याद रख कि संयम स्वस्थता का वरदान है और संसार रोगों का अभिशाप है। गृहस्थ बनकर क्यों रोगों और पापों को आमंत्रण पत्रिका भेज रहा है?

फिर गृहस्थ जीवन में औषधि पान करने पर भी रोग का निदान हो, जरूरी नहीं परन्तु उन हिंसक दवाईयों के प्रयोग का महापाप जरूर बंध जाता है।

दूसरी तरफ मुनि जीवन में अधिकांश शाता वेदनीय कर्म का उदय होता है। साधना का जीवन अपने आपमें स्वस्थता की अचूक औषधि है। कायोत्सर्ग, प्रतिक्रमण, विहार, केश लुंचन, शुभ तप, मेदवर्धक भोजन का परित्याग, उपवास, उणोदरी आदि शुभ तप तन-मन को पवित्र एवं निर्मल बनाये रखते हैं। कदाच् अशाता का उदय हो जाये तो साधु तन और मन को अपवित्र होने नहीं देता। समता, सहनशीलता और धर्म-ध्यान के शीतल झरणे में अभिस्नात होकर प्रसन्नता को यथावत् बनाये रखता है। मुनि सनत कुमार की भांति कर्मोदय का परिणाम जानकर परमानंद में रमण करता है।

पर मुनि! तेरी हालत क्या होगी?

बुढ़ापा रोगों का निवास स्थल है।

जब अनेक प्रकार के भयंकर रोग तेरी काया पर काली छाया की तरह मंडरायेगे तब तेरी समाधि का क्या होगा?

जब बेटे मुँह फेर लेंगे।

पुत्र वधूओं को सेवा करने में प्रमाद होगा।

वृद्ध पत्नी से भी तेरी सार संभाल नहीं होगी।

बेटे दवाई पर व्यय करने की बजाय तुम्हारे 'रामशरण' की कामना करेंगे।

हाय! तेरी कैसी अवदशा-दुर्दशा होगी?

न कोई सान्त्वना देने वाला होगा, न समाधि देने वाला!

मरहम लगाने की बात तो दूर, जले पर नमक न छिड़के तो ही अच्छा होगा।

तूं भगवान से कामना करेगा- हे प्रभो! मुझे उठा ले इस दुनिया से! तब आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान तुझे दुर्गति में ले जायेंगे। तेरी दशा ठीक वैसी ही होगी जैसे धोबी का कुत्ता, न घर का, न घाट का।

ए चंचल मना! जरा गहराई से सोच! विचार कर!

क्यों अपनी झोंपड़ी को अपने हाथों उजाड़ रहा है?

क्यों अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मार रहा है?

क्यों जानबुझकर गर्त में गिर रहा है?

यहाँ सब कुछ मिलेगा:-

- गुरू की गोद!
- प्रभु की शरण!
- स्वाध्याय की संजीवनी!
- तप का अभेद्य सुरक्षा कवच!
- समाधि का महामंत्र!
- समता की जड़ी बूटी!

संसार के खेल में तेरी केवल हार ही होनी है, अत: **'संयम में ही सुख है'** यह मानकर दीक्षा का त्याग मत कर। यही तेरी हितशिक्षा है।

आत्म कल्याण की तीव्र उत्कंठा की परिणति...

संयम जीवन का आगाज...

परम पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक गुरुदेव **श्री मनोज्ञसागरजी म.सा**

के शिष्य रत्न, स्वाध्याय प्रेमी, श्री कुशल पद्मावती ट्रस्ट–दुर्ग के प्रेरक परम पूज्य

मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म.सा.

के संयम के तृतीय वर्ष प्रवेश

जेठ सुदि तेरस दिनांक 11 जून 2014 पर

हार्दिक वंदना एवं अभिवंदना...

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ-दुर्ग

अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद कोठारी, महामंत्री श्री प्रवीन लोढा

.श्रीमती शांतिदेवी छाजेड़

सी.ए. मिनेश-चन्दन छाजेड़, नीलम कंचन बाफना, प्रवीन दीपा गोलछा

दिनेश नीता बाफना, डॉ. चंदर बाफना, पारुल गोलछा, शिखा बाफना, दिव्या गोलछा,

काजल बाफना, सोमेश बाफना, प्रभास बाफना, विधि छाजेड़ एवं रिद्धि छाजेड

08
तत्त्वावबोध

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

चतुर्भंगी का चमत्कार

६७. कर्म-अन्त

1. स्वयं के और दूसरों के कर्मों का अन्त करें- तीर्थंकर परमात्मा
2. स्वयं के कर्मों का अन्त करे पर दूसरों के न करें- प्रतिमाधारी साधु
3. स्वयं के नहीं पर दूसरों के कर्मों का अन्त करें- खंधक मुनि
4. स्वयं व दूसरों के कर्मों का अन्त नहीं करे- तापस

६८. शील और वस्त्र

1. शील है पर वस्त्र नहीं- राजीमति(गुफा में)
2. शील और वस्त्र, दोनों नहीं है- व्यभिचारिणी स्त्री
3. शील नहीं है, पर वस्त्र है- कुलटा स्त्री
4. शील और वस्त्र, दोनों है- सीता सती आदि

६९. पिता-पुत्र-तारकता

1. मैंने पिता को तारा- याश-भार्गव, देवभद्र
2. मैंने पुत्र को तारा- शय्यंभवसूरि एवं मनक मुनि
3. पुत्र-पिता, दोनों नहीं तिरे- श्रेणिक और कोणिक
4. पुत्र-पिता, दोनों तिरे- आदिनाथ और भरत चक्री

७०. त्याग-राग

1. मैंने त्याग का त्याग किया- कण्डरीक मुनि
2. मैंने राग का त्याग किया- नेमिनाथ
3. मैंने त्याग का राग किया- जिनदत्तसूरि
4. मैंने राग का राग किया- गौतम स्वामी

७१. चार वैरागी

1. स्वयं वैरागी, दूसरों को भी वैरागी बनाने वाले- मल्लवादीसूरि, अभयदेवसूरि (चोलमजीठ जैसे)
2. स्वयं वैरागी पर दूसरों को वैरागी नहीं बनाने वाले- प्रतिमाधारी साधु (परवाला जैसे)
3. स्वयं वैराग्य में कमजोर पर दूसरों को दृढ़ करने वाले- अंगारमर्दकाचार्य (चूने जैसे)
4. स्वयं भी वैराग्य में कमजोर, दूसरों को भी कमजोर करने वाले- सूराचार्य आदि यति (खड़ी जैसे)

७२. आम और एरण्ड

1. आम का वृक्ष, आम का परिवार- आदिनाथ एवं भरत, आदित्ययशा आदि
2. आम का वृक्ष, एरण्ड का परिवार- गर्गाचार्य और उनके अवगुणी शिष्य
3. एरण्ड का वृक्ष और आम का परिवार- अंगारमर्दकाचार्य, मंगू आचार्य और उनके गुणी शिष्य
4. एरण्ड का वृक्ष, एरण्ड का परिवार- गोशालक एवं उसका परिवार

प. पू. साध्वी
श्री प्रगुणाश्रीजी म.सा.

प्रथम पुण्यतिथि

प. पू. साध्वी श्री प्रगुणाश्रीजी म.सा.

की प्रथम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

श्रद्धावनंत महेन्द्रभाई बापना-हेमलता, प्रकाश सुराणा-शांतिदेवी

फर्म : सुदर्शना प्रोविजन एण्ड जनरल स्टोर

श्री जैसलमेर लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, जैसलमेर

दादा श्री जिनकुशलसूरि ट्रस्ट, कुशल धाम, ब्रह्मसर

चारों दादा गुरूदेव यात्रा संघ आयोजित

गुरुवरों को नमन

बिलाड़ा में गुरुवर का आशीर्वाद

प्रवचन श्रवण

कुशल वाटिका (बाड़मेर) में दर्शन वंदन

अभिनंदन कुशल वाटिका ट्रस्ट द्वारा

अभिनंदन श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट द्वारा

संघ आयोजक

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा हाला वाले (अहमदाबाद)

28
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

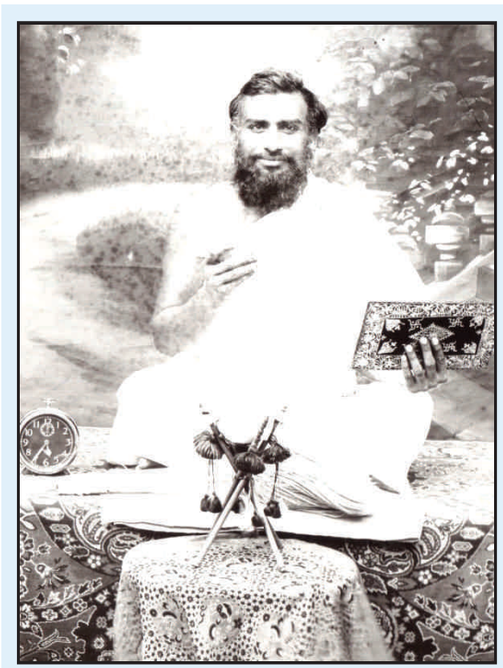

घटना वि. सं. 2008 सन् 1951 की है। पूज्य गुरुदेव श्री का चातुर्मास सिद्धाचल की पावन भूमि पर था। पूज्यश्री के साथ उनके गुरूभ्राता पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म. सा. थे।

खान्देश, महाराष्ट्र का भ्रमण कर मुंबई, ठाणा का चातुर्मास संपन्न कर वे पालीताना पधारे थे। पालीताना गांव में स्थित रणसी देवराज नामक धर्मशाला में बिराजमान थे।

उस समय के पालीताना का वातावरण अलग था। इतनी धर्मशालाऐं न थी, न इतनी भोजनशालाऐं थी। साधु साध्वी गांव में ही गौचरी पानी के लिये जाते थे। तपागच्छीय पूज्य आचार्य श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास भी पालीताना में था।

उस समय राजस्थान के नाना गांव में एक घटना घटी थी। वहाँ बिराजमान जैन साधुओं के साथ कुछ असामाजिक तत्वों ने खतरनाक मारपीट की थी।

इस घटना के विरोध में ता. 27 सितम्बर 1951 को नगरशेठ शेठ श्री वनमालीदासजी के निमंत्रण पर पालीताना की सुप्रसिद्ध मोतीसुखिया धर्मशाला में विशाल सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा की अध्यक्षता पूज्य आचार्य श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी म.सा. कर रहे थे। सभा के मुख्य वक्ता पूज्य गुरुदेवश्री थे। पूज्यश्री प्रखर व्याख्याता के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। मुंबई आदि में कई सामूहिक प्रवचनों के आयोजन हुए थे। उनकी छाप

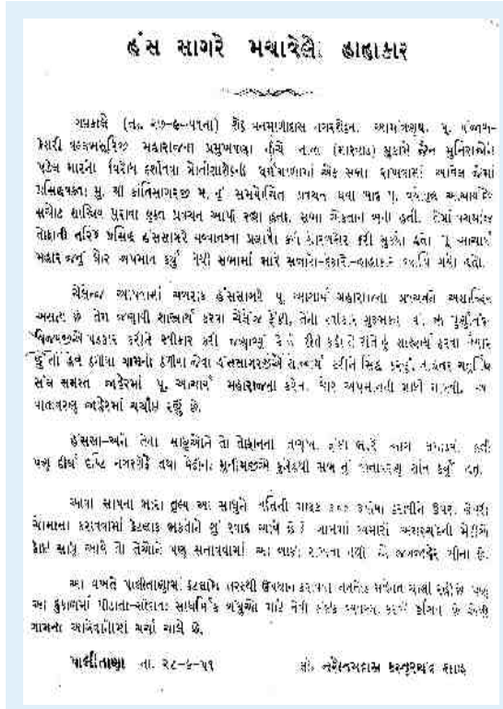

હંસ સાગરે મચાવેલો હાહાકાર

[illegible]

एक क्रान्तिकारी प्रवचनकार के रूप में थी।

पालीताना की इस विशाल धर्मसभा में उनका पौन घंटे का जोश से भरा हुआ प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा- साधु के लिये यह एक उपसर्ग है। साधु कभी उपसर्गों से घबराता नहीं है। वह उसका प्रतीकार भी नहीं करता। पाप कर्म का उदय समझ कर समता से सहन कर लेता है। पर ऐसी दशा में हमारे समाज को क्या करना चाहिये! साधुओं की रक्षा करना समाज का कर्त्तव्य है। इसका चिंतन जरूरी है। यह हमला किसी एक साधु पर नहीं है, अपितु जैन धर्म पर है... जैन संस्कृति पर है। इसे किसी भी किंमत पर सहन नहीं किया जाना चाहिये।

उन्होंने कहा था- सच्चा जैन श्रावक वो है, जो आत्म कल्याण के लिये माला लेकर जाप करता है तो संस्कृति और धर्म पर हमला करने वालों के प्रति शस्त्र का प्रयोग भी करता है। कुमारपाल महाराजा ने जैन साधु की ओर अंगुली उठाने वाले की अंगुली का छेद करवा दिया था। समाज को जागृत होना है।

पूज्यश्री के धाराप्रवाह जोशीले प्रवचन के पश्चात् पूज्य आचार्यश्री विजयवल्लभसूरिजी म.सा. का प्रवचन हुआ था। इस बीच मुनिश्री हंससागरजी म. जो उस सभा में मौजूद थे, वे पूज्य गुरुदेव श्री कान्तिसागरजी म. के प्रभावक प्रवचन को शास्त्र विरूद्ध बताकर विरोध में जोर जोर से बोलने लगे। पूज्य आचार्यश्री के प्रवचन में विक्षेप पैदा हो गया। पूज्य आचार्यश्री ने पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन का पूर्ण समर्थन करते हुए कहा- इसमें कुछ भी अशास्त्रीय नहीं है। मैं शास्त्रार्थ करने के लिये तैयार हूँ।

उपस्थित जन समूह ने मुनि श्री हंससागरजी म. द्वारा किया गया प्रतिवाद जरा भी उचित नहीं लगा। पूरी सभा उनके विरोध में हो गई। उन्हें बिठाने व सभा से बाहर करने का प्रयत्न करने लगी। नगरशेठ शेठ श्री वनमालीदासजी ने जैसे तैसे उन्हें शांत किया।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने डुठारिया की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् विहार कर नाडोल, राणकपुर, उदयपुर, केशरियाजी, हिम्मतनगर होते हुए अहमदाबाद पधारे। वहाँ ता. 25 को नीलकंठ पार्क, शाहीबाग स्थित मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर में गुरु गौतमस्वामी की प्रतिष्ठा के पश्चात् विहार कर बडौदा होते हुए ता. 2 जून 2014 को सूरत के पाल उपनगर स्थित वेस्टर्न शिखरजी सोसायटी में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा हेतु प्रवेश किया। ता. 4 जून को प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् उन्होंने नाशिक की ओर विहार किया है, जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 18 जून को श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

नाशिक प्रतिष्ठा के बाद संगमनेर होते हुए ता. 25 के आसपास पूना पहुँचेंगे। वहाँ से इचलकरंजी की ओर विहार करेंगे। जहाँ उनका चातुर्मास प्रवेश ता. 6 जुलाई 2014 रविवार को होगा।

संपर्क सूत्र-
पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
श्री मणिधारी भवन
श्री पाद नगर, इचलकरंजी - महा.
संपर्क - मुकेश : 097843 26130, 098251 05823

गुरू

मुमुक्षु शुभम लूंकड़

गुरू की महत्ता

एक शिष्य के जीवन में गुरू का प्रवेश किस प्रकार होता है। गुरू का समागम किस प्रकार उसे अंधकार से परिपूर्ण जीवन से मुक्त कर प्रकाश की ओर प्रवृत्त करता है। ऐसे ही जैसे किसी बीमार व्यक्ति का संपर्क योग्य डॉक्टर से होता है।

जिस प्रकार एक डॉक्टर किसी बीमार को देखकर उसकी बीमारी का पता करके उस बीमारी को उस बीमार की जिन्दगी से मुक्त करने के लिए टेबलेट्स देता है। उस बीमारी का कॉन्टेक्ट उसकी बॉडी से है।

ठीक! इसी प्रकार एक शिष्य की बीमारी उसकी आत्मा से संबंधित है। उसकी आत्मा पर चिपके क्रोध, मान, माया, लोभ इत्यादि पाप कर्म को दूर करने के लिए डॉक्टर रूपी गुरू अगर उस शिष्य को मिल जाए तो उसकी आत्मा रूपी नैया कभी भी संसार के चक्कर, भव-भ्रमणा में नहीं डूबेगी, बल्कि मोक्ष रूपी तट को प्राप्त हो सकती है।

अविवेकी को विवेकी बनाना,
मिथ्यात्वी को सम्यक्त्वी बनाना,

जो उन्मार्ग पथ पर प्रस्थान कर रहा है उसे सन्मार्ग पर लाना यह काम सद्गुरू का है। जिस प्रकार एक Scientist का काम है, विज्ञान ने क्या कहा, क्या है इस विज्ञान में उसकी report एक Scientist के द्वारा प्राप्त होती है।

राह पर पड़े पत्थर का मूल्य हर व्यक्ति नहीं समझता। जो अज्ञानी है, वह व्यक्ति उस पत्थर को ठोकर भी लगा देता है और वही पत्थर एक शिल्पकार के हाथ आ जाए तो वह उस राह पड़े पत्थर में भी परमात्मा का स्वरूप बना सकता है।

ठीक! इसी तरह एक गुरू के पास अज्ञानी शिष्य आ जाए तो वह अज्ञानी भी ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता है।

गुरू की जिनशासन में महत्वपूर्ण भूमिका है। जैन दर्शन का मूल उद्देश्य व रहस्य हम गुरू से ही प्राप्त कर सकते हैं, ज्ञान भी गुरू ही देता है। दर्शन भी गुरू बनाता है और चारित्र का मंगल कलश भी गुरू के हाथों ही प्राप्त कर सकते हैं।

मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. जैसे परम गुणवान्, चारित्रवान्, ज्ञानदाता, शिक्षादाता, का वरद सानिध्य प्राप्त हुआ।

गुरुवर का गर्भागमन हमारे अध्यात्म की प्रतीक्षा है।
गुरुवर का जन्म हमारे अध्यात्म जीवन की अपेक्षा है।
गुरुवर की दीक्षा हमारे अध्यात्म जीवन की सुशिक्षा है।
गुरुवर का गणिपद हमारे अध्यात्म जीवन की सुरक्षा है।
गुरुवर का नेतृत्व हमारे अध्यात्म जीवन की समीक्षा है।

पंचांग

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

JULY 2014

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1 आषाढ़ सुदि 4	2 आषाढ़ सुदि 5	3 आषाढ़ सुदि 6	4 आषाढ़ सुदि 7	5 आषाढ़ सुदि 8
6 आषाढ़ सुदि 8	7 आषाढ़ सुदि 9	8 आषाढ़ सुदि 10/11	9 आषाढ़ सुदि 12	10 आषाढ़ सुदि 13	11 आषाढ़ सुदि 14	12 आषाढ़ सुदि 15
13 श्रावण वदि 1	14 श्रावण वदि 2/3	15 श्रावण वदि 4	16 श्रावण वदि 5	17 श्रावण वदि 6	18 श्रावण वदि 7	19 श्रावण वदि 8
20 श्रावण वदि 9	21 श्रावण वदि 10	22 श्रावण वदि 11	23 श्रावण वदि 12	24 श्रावण वदि 13	25 श्रावण वदि 14	26 श्रावण वदि 30
27 श्रावण सुदि 1	28 श्रावण सुदि 1	29 श्रावण सुदि 2	30 श्रावण सुदि 3	31 श्रावण सुदि 4		

पर्व दिवस				
	चौमासी प्रतिक्रमण 11-07-14	पाक्षिक प्रतिक्रमण 26-07-14	आषाढ सुदि 8 की वृद्धि	आषाढ सुदि 11 का क्षय
	श्रावण वदि 3 क्षय	श्रावण सुदि 1 की वृद्धि	मासधर 31-07-14	रोहिणी 22-07-14

श्री जिनभक्तिसूरि स्वर्गवास दिवस	आषाढ सुदि 4-1804	श्री वासुपूज्यस्वामी मोक्ष कल्याणक	आषाढ सुदि 14
श्री जिनरंगसूरि स्वर्गवास	आषाढ सुदि 5-1758	चातुर्मास प्रारंभ, चौमासी प्रतिक्रमण	आषाढ सुदि 14
श्री महावीर स्वामी च्यवन कल्याणक	आषाढ सुदि 6	श्री श्रेयांसनाथ मोक्ष कल्याणक	श्रावण वदि 3
श्री अभयदेवसूरि आचार्य पदारोहण	आषाढ सुदि 6-1167	बीस विहरमान च्यवन कल्याणक	श्रावण वदि 5
श्री नेमिनाथ मोक्ष कल्याणक	आषाढ सुदि 8	श्री अनन्तनाथ च्यवन कल्याणक	श्रावण वदि 7
आचार्य श्री जिनराजसूरि द्वितीय स्वर्गवास	आषाढ सुदि 9-1700	श्री नमिनाथ जन्म कल्याणक	श्रावण वदि 8
श्री जिनदत्तसूरि स्वर्गवास	आषाढ सुदि 11-1211	9 श्री कुंथुनाथ च्यवन कल्याणक	श्रावण वदि 9
श्री जिनआनंदसूरि जन्म	आषाढ सुदि 12-1946	सुदि 2 श्री सुमतिनाथ च्यवन कल्याणक	श्रावण सुदि 2
		4 श्री जिनप्रबोधसूरि जन्म दिवस	श्रावण सुदि 4-1285

कुशल वाटिका, सूरत में चल प्रतिष्ठा

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 2 जून 2014 ज्येष्ठ सुदि द्वितीय चौथ सोमवार को शुभ मुहूर्त्त में सूरत नगर के पाल क्षेत्र स्थित कुशल वाटिका परिसर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर की चल प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

जिन मंदिर में मुनिसुव्रतस्वामी, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि एवं नाकोडा भैरव की प्रतिमाजी बिराजमान की गई।

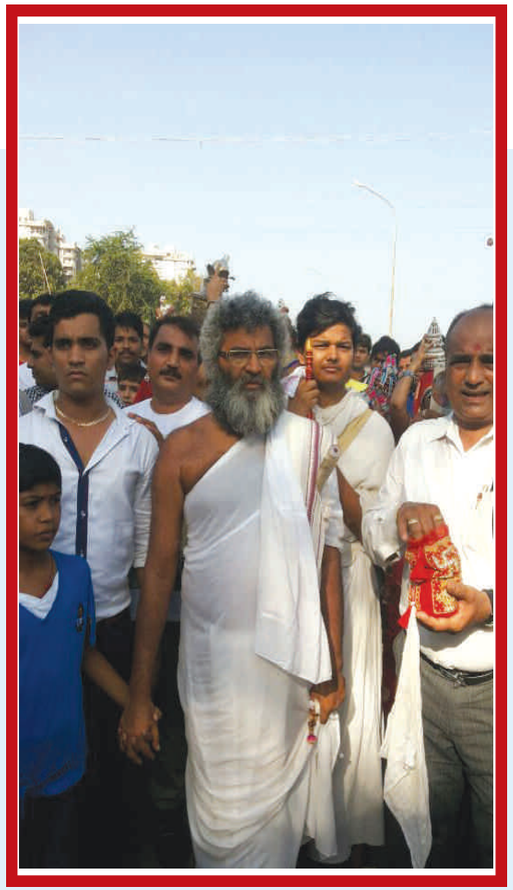

श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान को बिराजमान का लाभ शा. वनेचंदजी लालचंदजी मंडोवरा सिणधरी वालों ने लिया। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि का लाभ श्रीमती सुआदेवी देवीचंदजी लुणिया शेरगढ एवं श्री नाकोडा भैरव का लाभ श्री बाबुलालजी राणमलजी सिंघवी सिणधरी ने लिया। इस अवसर पर स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

श्री डुठारिया में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा का अनोखा उत्साह

समाचार दर्शन

पाली जिले में सोमेसर के पास डुठारिया गांव में वर्षों बाद एक ऐतिहासिक अवसर उपस्थित हुआ। लगभग 150 ओसवाल परिवारों की बस्ती वाला यह एक अनजाना गांव आज पूरी पट्टी में चर्चा का केन्द्रबिन्दु बन गया है।

इस गांव की यह एक अनूठी विशेषता है कि यहाँ ओसवालों का एक गोत्र ही निवास करता है। अन्य गोत्र वाला कोई भी यहाँ आकर निवास नहीं कर सकता, ऐसा बडे बुजुर्गों का कथन व लोगों का अनुभव है। मात्र छाजेड गोत्र के लोग ही यहाँ निवास करते हैं। दो भाई आकर ठहरे थे, इस कारण डु-ठारिया के नाम से प्रसिद्ध हुए इस गाँव में उन दो भाईयों का परिवार निवास करता है। आज लगभग 150 परिवार हैं जो पूना, मुंबई, चेन्नई, सांगली आदि क्षेत्रों में रहते हुए भी अपने गांव के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं। खरतरगच्छ परम्परा का यह ऐतिहासिक गांव है, जहाँ सभी घर खरतरगच्छ परम्परा के हैं... दादा गुरुदेव के अनुयायी हैं।

लगभग 6 वर्षों पूर्व आदिनाथ परमात्मा के प्राचीन जिन मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया था। सफेद संगमरमर के मूल्यवान् पाषाणखण्डों से देवविमान-सा जिन मंदिर तैयार हुआ। मंदिर निर्माण समिति ने अथक पुरूषार्थ किया तथा तन, मन और धन का संपूर्ण रूप से समर्पण करते हुए कलात्मक साज सज्जा के साथ मंदिर निर्माण का कार्य पूर्णता को प्राप्त हुआ।

श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर बिराजित पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के पास श्री डुठारिया जैन सकल संघ अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने की भावभरी विनंती लेकर पहुँचा। आसोज सुदि पूर्णिमा के मंगल प्रभात में पूज्यश्री ने उनके भाव भरे आग्रह को स्वीकार किया एवं वैशाख सुदि 12 रविवार ता. 11 मई 2014 का मंगल मुहूर्त प्रदान किया।

पूज्यश्री का चातुर्मास इचलकरंजी निश्चित हो चुका था। पर डुठारिया की प्रतिष्ठा के लक्ष्य से राजस्थान की ओर विहार हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में चितलवाना से श्री शंखेश्वर तीर्थ का छह री

पालित पैदल संघ, बाडमेर कल्याणपुरा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, जोधपुर जिले के आगोलाई नगर में प्रतिष्ठा आदि शासन प्रभावना के विशिष्ट कार्य संपादित करते हुए वैशाख सुदि 3 अक्षय तृतीया ता. 2 मई 2014 को पूज्यश्री आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने श्री डुठारिया नगरी में मंगल प्रवेश किया। तपागच्छीय पू. आचार्य श्री हिमाचलसूरि समुदाय के पू. साध्वी श्री गरिमाश्रीजी म. आदि ठाणा यहाँ पधार चुके थे।

पूज्यश्री के प्रवेश समारोह के साथ ही प्रतिष्ठा की देवदुन्दुभि का निनाद हुआ। जोधपुरी साफों में सुसज्ज डुठारिया के श्रेष्ठिजन एक अलग ही छाप अंकित कर रहे थे। सोने में सुहागा उस दिन वर्षीतप के दो तपस्वी बहिनों का पारणा संपन्न हुआ। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के अपने मांगलिक प्रवचन में कुशल गुरुदेव के गोत्र की नगरी डुठारिया वासी संघ को इस प्रतिष्ठा महोत्सव में संपूर्ण रूप से एकजुट होकर जुड जाने का आह्वान किया।

ता. 4 मई को बज रही शहनाईयों की गूंज की दिव्य ध्वनि मधुरता का अमर पर्याय थी। सभी लोगों के पाँवों में थिरकन तो तन मन में स्फूर्ति छा गई थी। क्रमशः कार्यक्रम गतिशील हो रहे थे। सबसे पहले हुआ कान्ति मणि नगर का उद्घाटन, उसके बाद प्रतिष्ठा समारोह की पहली पहली प्रसादी से ऊर्जा ग्रहण कर विनीता नगरी एवं जिनकुशल नगर का उद्घाटन किया गया। जिन कुशल नगर में परमात्मा की विविध पूजाओं का आयोजन किया जा रहा था। वेदिका पूजन, परमात्मा की वेदिका पर स्थापना, कुंभ स्थापना, दीप स्थापना, जवारारोपण आदि पूजाओं के माध्यम से सम्यक्त्वी देवी देवताओं के आह्वान, पूजन व पूजाबलि की प्रक्रिया गतिमान् हुई। इधर घर घर तोरण बांधे गये।

वजनदार चमकदार विशेष प्रकार के मूल्यवान् तोरण बनाये गये थे। ऐसे विशिष्ट तोरणों को देखकर पूजनीया बहिन म. ने कहा था- ऐसे तोरण तो हमने पहली बार देखे हैं। तोरण क्या ऐसी पत्रिका भी पहली बार देखी थी। पत्रिका जहाँ जहाँ पहुँची थी, वहाँ वहाँ से खबरें थी कि ऐसी बही खाता नुमा पत्रिका पहली बार प्रकाशित हुई है। पत्रिका ने पूरे भारत में डुठारिया को एक अलग पहचान दी थी। जैन जगत में डुठारिया सुप्रसिद्ध हो गया था।

समाचार दर्शन

ता. 5 मई को नंद्यावर्त पूजन का विशिष्ट विधान पूज्य गुरुदेवश्री ने संपन्न किया। फिर दशदिक्पाल पूजन, नवग्रह पूजन आदि पूजनों की श्रृंखला में हो रहे विशिष्ट मंत्रोच्चारणों द्वारा पूरे परिसर... नगर के वातावरण को पवित्रतम बनाया जा रहा था। आज छत्तीसगढ रत्ना महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्याऐं पूजनीया साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्याऐं पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा ने पधार कर प्रतिष्ठा की शोभा में अभिवृद्धि की।

ता. 6 मई का मुहूर्त्त अनूठा था। विशिष्ट योग थे... विशिष्ट नक्षत्र एवं लग्न-नवांश की उपस्थिति थी। उस मंगल मुहूर्त्त में अंजनशलाका का रहस्यपूर्ण प्रथम विधान संपन्न किया गया। यह था परमात्मा का च्यवन कल्याणक विधान! इन्द्र इन्द्राणी, माता पिता, प्रतिष्ठाचार्य गुरुस्थापन, धर्माचार्य स्थापन आदि की प्रारंभिक विधियों के पश्चात् परमात्मा की स्वर्ण अभिमंडित पंचधातुमयी प्रतिमा को गोदुग्ध से परिपूर्ण चांदी की चमकदार कोठी में स्थापित किया गया। उस पर वर्ण विन्यास के द्वारा मंत्रों की प्रतिष्ठा की गई। कुशल नगर में इस विधान को संपन्न कर चतुर्विध संघ ने प्रयाण किया विनीता नगरी के लिये!

ओह! विनीता नगरी का निर्माण कितना अद्भुत हुआ था। लोगों ने दांतों तले अपनी अंगुलियां दबा दी थी। साक्षात् राजमहल ही प्रतीत हो रहा था। गुलाबजल का छिडकाव पूरे गांव में विशिष्ट यंत्र के माध्यम से हो रहा था। भीषण गर्मी के उच्च तापमान में स्वाभाविक रूप से न्यूनता आ गई थी। पूरे गांव का वातावरण अत्यन्त खुशनुमा हो रहा था। कल्याणक महोत्सव के प्रथम दिन माता द्वारा देखे गये चौदह स्वप्न, स्वप्न फल, इन्द्रासन कंपन, इन्द्र स्तुति आदि के भावपूर्ण दृश्य लोगों को तीसरे आरे में ले जा रहे थे।

ता. 7 मई को जिनकुशल नगर में विधि विधान के साथ मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा का जन्म कल्याणक संपन्न हुआ। विनीता नगरी में परमात्मा के जन्म कल्याणक महोत्सव के मध्य 7-8 वर्ष की छोटी छोटी बालिकाओं ने छप्पन दिक्कुमारिकाओं की भूमिका पाकर धन्यता का अनुभव किया। नृत्य द्वारा आन्तरिक भक्ति को प्रस्तुत किया। चौसठ इन्द्र बन कर मेरू पर्वत पर परमात्मा के अभिषेक संपन्न कर अपने पुण्य की सराहना करने लगे।

प्रतिदिन कल्याणक महोत्सव के साथ मध्याह्न काल में

विशिष्ट महापूजनों में मंत्रोच्चारण श्रवण करने का आनंद अलग से लिया जा रहा था। भक्तामर महापूजन, पार्श्वनाथ पद्मावती महापूजन, नाकोडा भैरव महापूजन आदि विविध पूजनों के द्वारा वातावरण की पवित्रता में लगातार अभिवृद्धि की जा रही थी।

ता. 8 मई को संपन्न हुए जन्म बधाई के समारोह ने सभी लोगों को भावुक बना दिया। पूरा पाण्डाल नाच रहा था। सभी लोग मानसिक रूप से नाभि महाराजा के दरबार और उनकी प्रजा के रूप में जैसे एकमेक हो गये थे। ऐसा ही प्रतीत हो रहा था- जैसे तीसरे आरे के उस कालखण्ड के हम प्रत्यक्षदर्शी हैं। कल्याणकों की व्याख्या पूज्यश्री ने बहुत ही अनूठे ढंग से की थी।

नामकरण, पाठशाला गमन आदि दृश्य सांसारिक जीवन के उत्तरदायित्व की प्रेरणा दे रहे थे। गृहस्थ जीवन में परस्पर विनय, सामंजस्य और समन्वय की भूमिका समझा रहे थे। रात्रि के शुभ वातावरण में कायमी ध्वजा और स्वर्ण कलश आदि के चढावों ने उन भाग्यशालियों के नाम घोषित कर दिये, जिन्हें परमात्मा के श्रीचरणों में इन अनूठे लाभों को प्राप्त करना था।

ता. 9 मई को परमात्मा के विवाह का आयोजन था। गीत संगीत और नृत्य के वातावरण से उत्सव गूंज रहा था। हो रहे कन्यादान में दिल खोलकर लोग स्वर्ण अर्पण कर रहे थे। दोपहर में मेहंदी के कार्यक्रम में महिलाओं व कुमारिकाओं ने गीत व नृत्य का अनूठा आनंद लिया था। हकीकत में इस प्रतिष्ठा का पुरूष वर्ग की अपेक्षा महिलाओं व बालिकाओं ने कई गुना आनंद लिया था। उस समय बालिकाओं व महिलाओं ने जो सांस्कृतिक धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, उसकी प्रतिध्वनि लम्बे समय तक मानस में गूंजती रही थी। आज पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा पधारे थे। साध्वियों की सानिध्यता में अभिवृद्धि हुई थी।

रात्रि की बंदोली ने पूरे गांव को गुलालमय बना दिया। रात्रि 12 बजे प्रारंभ हुई बन्दोली तीन बजे पूर्ण हुई। पूरा गांव उमड पडा था। गुलाल के माध्यम से आनन्द की बरसात की जा रही थी।

ता. 10 मई को परमात्मा के दीक्षा कल्याणक की विराट् शोभायात्रा! वर्षीदान का भावात्मक आयोजन! अनासक्ति की साक्षात् प्रेरणा! वर्षीदान के माध्यम से परमात्मा का सर्वत्याग का संदेश! जो मेरा है, वह मेरे ही पास है। जो मेरा नहीं है, उसे मैं अपने

पास रखने का भ्रम पालना नहीं चाहता! जिसे चाहिये, ले लें। पर मैं देने वाला कहाँ! लेने वाले का पुण्य ही मुझसे यह कार्य करवा रहा है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। वर्षीदान के द्वारा परमात्मा यह भी तो संदेश देना चाहते हैं कि मैं देने का अहंकार न करूँ! उसका उपादान है, मैं तो निमित्त हूँ।

और उसके बाद हुआ परमात्मा की दीक्षा का महाविधान! पूज्यश्री ने संयम की भूमिका, संयम की महत्ता, संयम की महिमा समझाई थी। संयम क्या है, इसकी व्याख्या कर भूमिका समझाई। संयम प्राप्त किये बिना मोक्ष प्राप्त हो नहीं सकता, तीर्थंकर जैसे तीर्थंकरों को भी आत्म कल्याण करने के लिये संयम अंगीकार करना होता है, यही तो संयम की महत्ता है।

और महिमा का तो कहना ही क्या! देवता भी नमस्कार करते हैं, वे भी झंखना करते हैं- कब मनुष्य भव मिले और कब संयम मिले!

माता, पिता, बहिन और कुल महत्तरा की भूमिका करने वाले अपने पात्रों के साथ एकाकार हो गये थे। उनकी आंखों से अश्रुधार बह रही थी। पूरा पाण्डाल रिषभकुमार के बिछुडन के दर्द से आंसु बहा रहा था।

रात्रि में अंजनशलाका का महाविधान! श्रद्धासंपन्न श्रावक श्राविका गण उस अनमोल और अद्वितीय क्षण के साक्षी बने। प्राण प्रतिष्ठा के दिव्य वातावरण के निर्माण में अपनी भक्ति की ऊर्जा का उपयोग कर धन धन्य और कृत कृत्य बने। प्रथम देशना के अमृत वचनों का श्रवण कर अपने जीवन को धन्य बना लिया। प्रात: शुभ वेला में परमात्मा के 108 अभिषेक कर निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया गया।

आज 11 मई का मंगल मुहूर्त्त! जिन घडियों की प्रतीक्षा पिछले कितने समय से थी! जिस क्षण के लिये ही इतना तामझाम था। डुठारिया के निवासी प्राय: प्राय: आ चुके थे। घर सब खुल गये थे। प्रतिष्ठा के मंगल अवसर की वर्धापना के लिये अपने गृहों का अभिनव संस्कार किया गया था। प्राय: सभी घरों का जीर्णोद्धार हो चुका था। पूरा गांव चमक रहा था... चहक रहा था। मकान भी जैसे बोल रहे थे...! गलियां गीत गा रही थी। पूरा गांव मुखर हो उठा था। जिन मंदिर के चारों ओर तीव्र हलचल हो रही थी। प्रतिष्ठा के नजदीक आते पलों में श्वासों का उतार चढाव तीव्र हो उठा था।

समाचार दर्शन

ध्वजा के लाभार्थी परिवार ध्वजा लेकर नाचते हुए जिन मंदिर में प्रवेश कर चुके थे। सैंकडों लोग मंदिर के भीतर प्रतिष्ठा को अपनी आंखों से निहार कर धन्यता का अनुभव कर रहे थे तो हजारों लोग मंदिर के बाहर खडे होकर साक्षात् चढती ध्वजा को अपलक नेत्रों से निहार रहे थे। और विशाल टेलिविज़न यंत्र के माध्यम से जिन मंदिर के भीतरी दृश्यों के दर्शन कर धन्य हो रहे थे।

बाहर से बडी संख्या में अतिथि गणों का आगमन हुआ था। हर घर के संबंधी आज यहाँ उपस्थित थे। आशा से अधिक अतिथि पधारे थे। इस कारण प्रसन्नता का कोई पार नहीं था।

ठीक समय पर पूज्यश्री पधार गये थे। आज उनके आयंबिल का तप था। वे हमेशा अंजनशलाका प्रतिष्ठा के दिन आयंबिल ही करते हैं। ओम् पुण्याहं पुण्याहं की दिव्य ध्वनि प्रारंभ हो गई थी। और भी विविध प्रकार के मांगलिक मंत्रोच्चारण करवाये जा रहे थे।

तोरण वांदने की विधि के साथ ही प्रतिष्ठा के विशिष्ट मूल मंत्र उच्चरित हो रहे थे। शुभ मुहूर्त्त में मिथुन लग्न के नवांश में परमात्मा की प्रतिष्ठा संपन्न की गई। विशिष्ट मुद्राओं के साथ परमात्मा को गादीनशीन किया गया। सबके चेहरों पर एक अनमोल और विशिष्ट हास्य की रेखाऐं अंकित हो चुकी थी। प्रसन्नता से छलक रहा था उनका रोम रोम! वर्षों की साध पूरी हुई। पुरूषार्थ की सफल परिणति ने कार्यकर्त्ताओं के मुख मंडल की रौनक ही बदल दी थी। वे खिल खिला रहे थे। बाहर से पधारे अतिथि गण इस प्रतिष्ठा को निहार कर धन्य हो रहे थे। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि ऐसा भक्ति व ऊर्जा भरा महोत्सव जैसे प्रथम बार देखा है।

दूसरे दिन द्वारोद्घाटन के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्णता को प्राप्त हुआ। परमात्मा की भक्ति कर प्रार्थना की गई। हे परमात्मन्! आपकी प्रतिष्ठा आपने की है। हम क्या कर सकते हैं! आपकी प्रतिष्ठा की निर्विघ्न परिणति भी आपकी ही कृपा का परिणाम है। हम तो केवल गल्तियाँ ही कर सकते हैं। हे प्रभो! हमें क्षमा करना हमारी त्रुटियों के लिये!

परम पूज्य आस्था केन्द्र, वात्सल्य वारिधि, मरूधर मणि उपाध्याय भगवंत

गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ,

माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी एवं

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

को हार्दिक बधाई...

42 वां दीक्षा दिवस आषाढ वदि सप्तमी (7)

दिनांक 19 जून 2014

वंदनकर्त्ता

डॉ. यू. सी. जैन, अजय जैन, संजय जैन

लषित जैन, पार्थ जैन

उदयपुर

श्री मंदाणा नगर में

श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय प्रतिष्ठा उत्सव की हार्दिक शुभकामना

पावन निश्रा

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य

पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा.

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

आदि ठाणा 5

शुभाकांक्षी

श्री गणेशमल-सौ. हेमलता देवी,

पुत्र-पुत्रवधू-शीतलकुमार-क्षमादेवी

पुत्र-पौत्र-रूपाबाई, रामचंद्रजी कवाड़,

सजनदेवी दगडूलालजी कवाड़

मंदाणा-शहादा

पावन प्रेरणा

पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.सा.,

पू. साध्वी श्री चारित्रनिधिश्रीजी म.सा.

शुभाकांक्षी

श्री पृथ्वीराज-सौ. अरूणादेवी,

श्री इन्दरचंद-सौ. विद्यादेवी,

पुत्र-पुत्रवधु- सचिन-सौ. पूजा,

पुत्र-पुत्री-प्रतीक, निखीता, पौत्र-अहाना

पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र- स्व. श्री बदामीबाई,

चंपालालजी कोठारी - मंदाणा

(पुण्योदय से हमें ध्वजादण्ड, प्रतिष्ठा दिवस ध्वजा, स्वर्णकलश, स्वामीवात्सल्य, द्वारोद्घाटन आदि लाभ मिले है)

समाचार दर्शन

मंदाणा में प्रतिष्ठा का उल्लास

पू. प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री मज्जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य एवं गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. ठाणा- 5 एवं पू. प्रवर्त्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री समकितप्रज्ञाश्रीजी म. एवं पू. खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी श्री चारित्रनिधिश्रीजी म. की सानिध्यता में 14 मई 2014 वैशाख शुक्ला पूर्णिमा को विजय मुहूर्त्त में परमात्मा श्री वासुपूज्यस्वामी जिनमंदिर की प्रतिष्ठा अत्यन्त उल्लास से सम्पन्न हुई। 12 मई को पूज्य गुरुभगवंतों का मंगलमय प्रवेश के साथ कुंभ स्थापना, दीप स्थापना, ज्वारारोपण, भैरव पूजन, नवग्रह पूजन आदि विधि-विधान सानंद सम्पन्न हुए। चंपानगरी, मणिधारी कुशल नगर, कान्तिमणि सज्जन नगर का उद्घाटन हुआ। प्रतिष्ठा के दूसरे दिन 13 मई 2014 को भव्य वरघोड़े महोत्सव का आयोजन हुआ। वरघोड़े में युवकों में अतीव उल्लास प्रकट हो रहा था। वे नृत्य के द्वारा पुनः उसे अभिव्यक्ति दे रहे थे। गाँव के मुख्य भागों का स्पर्श करता हुआ वरघोडा मणिधारी कुशल नगर पहुँचा जहाँ ध्वजदण्ड, ध्वजा, स्वर्णकलश, मूलनायक श्री वासुपूज्यस्वामी, आदिनाथ, मुनिसुव्रतस्वामी, गौतमस्वामी, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि, नाकोड़ा भैरव, अम्बिका देवी के विराजमान आदि अनेक चढ़ावे सम्पन्न हुए जो आशातीत रहे। प्रखर प्रवचनकार मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. एवं मंदाणा नगर मंदिर की प्रेरणादात्री साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.सा. के प्रवचन हुए।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- परमात्मा की प्रतिमा भवजन-तरण का दिव्य उपक्रम है। यह जिनप्रतिमा का ही प्रभाव था कि खरतरगच्छ दिवाकर नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरि का कुष्ठ रोग जिनप्रतिमा के प्रक्षाल जल से नष्ट हो गया, आर्द्र कुमार ने सम्यक्दर्शन उपलब्ध कर उसी भव में सिद्धि पद का प्राप्त किया।

दोपहर में अठारह अभिषेक एवं दादा गुरुदेव की पूजा सम्पन्न हुई।

14 मई, 2014 को प्रातः जिनप्रतिमा आदि का मंदिर में प्रवेश विधान सम्पन्न हुआ।

शुभ मुहूर्त्त में ऊँ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् मंत्रोच्चारणों के साथ विशाल जनमेदिनी के मध्य जिनालय की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। आनंद की शहनाई गूंज उठी। पांवों में नृत्य के घुंघरू छनक उठे। मन की मुराद पूर्ण हो गयी।

श्री मंदाणा नगर में

श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय प्रतिष्ठा उत्सव की हार्दिक शुभकामना

पावन निश्रा

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य

पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा.

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

आदि ठाणा 5

शुभाकांक्षी

श्री पुखराज, रमेशचंद-सौ. कमलादेवी, श्रीमती इंदूबाई-सुरेशचंद, विनोद-सौ. वर्षादेवी, धनराज-सौ. सुमनदेवी, वंश, पार्थ चौरड़िया, शहादा-मंदाणा

पावन प्रेरणा

पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.सा.,

पू. साध्वी श्री चारित्रनिधिश्रीजी म.सा.

शुभाकांक्षी

श्रीमती रत्नादेवी-मिश्रीलालजी

पुत्र-पुत्रवधू- चंपालाल-सौ. ललितादेवी, कान्तिलाल-सौ. अनितादेवी, संजय-सौ. निशादेवी, प्रवीण-सौ. प्रीतिदेवी,

पौत्र-पौत्रवधू-श्रीपाल-सौ. पायल,

पौत्र- गोकुल, स्वरूपचंद, उज्ज्वल,

पौत्री- टीना, हर्षिता, भूमि लूणिया परिवार,

मंदाणा-लोहावट

दोपहर में अष्टोत्तरी शांति स्नात्र महापूजन सम्पन्न हुआ।

गुरुजनों का गुरुपूजन किया गया, कामली ओढ़ाई गयी। 15 मई 2014 को श्री पृथ्वीराजजी इन्दरचंदजी कोठारी परिवार ने द्वारोद्घाटन का लाभ प्राप्त किया।

इस अवसर पर बाहर से अनेक स्थानों से श्रद्धालु जन पहुंचे जिनमें मुम्बई, पूना, औरंगाबाद, नाशिक, मालेगाँव, इंदौर, चालीस गांव, गुन्टुर, बेंगलोर, हैदराबाद, वापी, वांसदा, सिलवासा, नंदुरबार, खेतिया, खापर, सेलम्बा, अक्कलकुवा, तलोदा, दोंडाइचा, नांदेड़ म्हसावद, सारंगखेड़ा, दोंडवाड़ा, उदवाड़ा, जलगोन, धूले आदि मुख्य थे।

सोमपुराश्री विनोद घनश्यामजी भीनमाल, संगीतकार कश्यप भाई पाटण, विधिकारक सुनील जैन-नीमच का भावभीना बहुमान किया गया।

मंदिर निर्माण हेतु भूमिदान दाता श्री मिश्रीलालजी पाबूदानजी लूनिया-मंदाना का अभिनंदन किया गया। प्रतिष्ठा की निर्विघ्नपूर्णता के लिये टीना चम्पालालजी लूणिया-मंदाणा ने सोलह उपवास की महान् तपश्चर्या की। तप का पारणा 17 मई 2014 को सम्पन्न हुआ।

15 मई, 2014 को छत्तीस कौम के भोजन का आयोजन किया गया। फलेचुंदड़ी का लाभ श्री पृथ्वीराजजी इन्दरचंदजी कोठारी-मंदाणा ने किया।

प्रतिष्ठा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रवीण लूणिया, विनोद चौरड़िया, दीपक लूणिया, गोकुल लूणिया का योगदान रहा।

प्रतिष्ठा के लाभार्थी

श्रीसंघ मंदाना द्वारा यह निर्णय लिया गया कि ध्वजा कायमी न होकर वार्षिक हो ताकि प्रतिवर्ष नये व्यक्ति को लाभ मिले। स्वर्ण कलश, ध्वजदण्ड प्रतिष्ठा एवं ध्वजा का लाभ श्री पृथ्वीराजजी इन्द्रचंदजी कोठारी-मंदाणा ने लिया जबकि 2072 की ध्वजा का लाभ क्रमशः गणेशमलजी दगडुमलजी कवाड-मंदाणा, टीकमचंदजी पाबूदानजी लूणिया-मंदाणा एवं वीरचंदजी जितेन्द्रकुमारजी संचेती-जलगोन वालों ने लिया।

मूलनायक श्री वासूपुज्यस्वामी बिराजमान- श्रीमती केशरबेन रमणलालजी रातडीया मुथा वापी, कुसुम बेन प्रेमचंदजी शाह-उदवाड़ा।

श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान- केशरबेन रमणलालजी रातडीया मुथा, राजेन्द्रजी रातडीया मुथा वापी।

श्री आदिनाथ भगवान बिराजमान व भराने का लाभ- श्री कन्हैयालालजी मिश्रीलालजी डोशी-वांसदा।

श्री गौतमस्वामी बिराजमान लाभ- पारसमलजी मिश्रीलालजी डोशी, वांसदा।

श्री दादा गुरुदेव बिराजमान लाभ- कुशलकुमारजी राणुलालजी गुलेच्छा, शहादा।

समाचार दर्शन

श्री नाकोड़ा भैरुजी बिराजमान लाभ- कचरुलालजी हीरालालजी नाहटा, शहादा।

श्री अंबिकादेवी बिराजमान लाभ- गणेशमलजी रावतमलजी बाफना, खेतिया।

श्री प्रासाद देवी बिराजमान लाभ- सुमनदेवी शैलेषजी गोयल, महू-इन्दौर।

रंगमंडप कलश के लाभार्थी- प्रकाशचंदजी गुलाबचंदजी बोथरा, वापी।

श्रृंगार चौकी कलश के लाभार्थी- शान्ताजी, कान्ताजी, पूना।

द्वारोद्घाटन के लाभार्थी- पृथ्वीराजजी इन्दरचंदजी कोठारी, मंदाणा।

कड़प्पा में आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न

दक्षिण प्रभाविका गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. व तपोरत्ना प.पू. सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म., साध्वी डॉ. प्रियलताश्रीजी म., साध्वी डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा-7 के पावन सानिध्य में आराधना भवन उद्घाटन संपन्न हुआ।

श्री संघ की आग्रहभरी विनंती को स्वीकार कर पूज्याश्री पार्श्वमणि तीर्थ की ध्वजा एवं पोषदशमी के एक हजार अट्ठम करवा कर आदोनी पधारे। फागुन चातुर्मास गुंटकल में फिर ताड़पत्री होते हुए कड़प्पा नगर में पधारे। श्री संघ के आपसी विचारभेद के कारण भवन के उद्घाटन में रूकावट थी। किन्तु जब से पूज्याश्री कड़प्पा में पधारे, तब से कड़प्पा में प्रतिदिन प्रवचन सुनते-सुनते प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आया। संघटन की एक डोर में पिरोकर एकता को स्थापित किया।

इस अवसर पर पंचाह्निका महोत्सव रखा गया। ता. 12 अप्रेल को श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा ता. 13 को महावीरस्वामी षट्कल्याणक पूजा व जन्म-कल्याणक उजवणी, वरघोड़ा निकला। 16 नूतन श्री जैन आराधना भवन का उद्घाटन व गौतमस्वामी महापूजन एवं सकल श्री संघ स्वामीवात्सल्य हुआ।

श्रीमान मांगीलालजी गादिया परिवार ने नवपद की ओली का लाभ लिया। पूज्याश्री द्वारा सप्तदिवसिय धार्मिक शिक्षण शिविर आत्मोत्कर्ष हेतु आयोजित हुआ।

खेतिया में प्रतिष्ठा

पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि के सानिध्य में खेतिया श्री संघ ने परिकर की पुनर्प्रतिष्ठा करवाने का निवेदन किया। पू. गुरुदेवश्री से आज्ञा प्राप्त कर पू. मुनि श्री 6 मई 2014 को खेतिया पधारे। उसी दिन अठारह अभिषेक सम्पन्न हुए एवं ऊँ पुण्याहं पुण्याहं के साथ शुभ मुहूर्त्त में परिकर की पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस मंदिर की प्रतिष्ठा पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में सात वर्ष पूर्ण सम्पन्न हुई थी। परिकर में प्रक्षाल जल भरने के कारण यह पुनः प्रतिष्ठा की गयी।

कुशल वाटिका अहमदाबाद में ध्वजारोहण

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री मुनिसुव्रतस्वामी कुशल वाटिका जैन संघ, शाहीबाग के अन्तर्गत श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर की चौथी वर्षगांठ के अवसर पर ता. 23 मई 2014 को ध्वजा चढाई गई। इस मंदिर की प्रतिष्ठा चार वर्ष पूर्व वि. 2067 ज्येष्ठ वदि 10 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में संपन्न हुई थी।

इस अवसर पर सतरह भेदी पूजा पढाई गई। स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

नाकोड़ा में वर्षीतप पारणा संपन्न

श्री नाकोड़ा तीर्थ पर पू. आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरीश्वरजी म. व आचार्य श्रीमद् विजयरविशेखरसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में अक्षय तृतीया पारणा का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें 275 आराधकों एवं 4 साध्वीजी भगवंतों के पारणे सम्पन्न हुए।

पारणा का वरघोड़ा हस्तीनापुर नगरी पहुंचा जहां 4 साध्वीजी भगवंत के वर्षीतप का पारणा था। उन्हें इक्षुरस वहराकर पारणा करवाया गया। इस अवसर पर नवकासी का लाभ श्री हीरालाल जितेन्द्रकुमार धनकुमार चौपड़ा द्वारा लिया गया तथा वर्षीतप तपस्वियों को प्रथम पारणा करवाने का लाभ श्री सुमेरमल अमृतलाल सिंघवी द्वारा लिया गया।

सूरत वेस्टर्न शिखरजी में प्रतिष्ठा संपन्न

मोकलसर निवासी श्रीमती झमुदेवी रिखबचंदजी गोलेच्छा परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित सूरत नगर के पाल क्षेत्र में वेस्टर्न शिखरजी परिसर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा के शिखरबद्ध जिन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री भाग्ययशाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 तथा पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की परम पावन निश्रा में ऐतिहासिक उत्सव के साथ ता. 4 जून 2014 को संपन्न हुआ। इस प्रतिष्ठा हेतु पूज्य गुरुदेवश्री एवं पूजनीया माताजी म. बहिन म. आदि बहुत उग्र विहार कर पधारे। प्रतिमाओं की अंजनशलाका डुठारिया नगर में संपन्न हुई थी।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ 4 जून 2014 को पूज्य गुरुदेव श्री के मंगल प्रवेश के साथ हुआ। इस अवसर पर पूज्यश्री ने परमात्मा के दिव्य स्वरूप का रहस्य समझाया। ता. 5 जून 2014 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। 2 हजार से अधिक लोगों की उपस्थिति ने महोत्सव को एक अनूठी गरिमा प्रदान की थी। ता. 6 जून को दिव्य मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा पार्श्वनाथ, दादा जिनकुशलसूरि आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

नगर सेठ श्री लूणकरणजी छाजेड का स्वर्गवास

बाडमेर निवासी उदारमना दानवीर सेठ श्री लूणकरणजी छाजेड का स्वर्गवास हो गया। वे 86 वर्ष के थे। बाडमेर में उनकी ओर से कॉलेज का निर्माण किया गया था। कुशल वाटिका बाडमेर का शिलान्यास उनके करकमलों द्वारा ही हुआ था। वे पूज्य गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त थे।

उनके जाने से समाज व गच्छ को अपार क्षति हुई है। शासन देव व दादा गुरुदेव से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति व शांति मिले। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

पालीताना में कु. अक्षिता की दीक्षा भव्य समारोह के साथ संपन्न

अनुमोदना

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनकैलाशसागरसूरीश्वरजी म.सा. एवं पू. मरुधरमणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञा एवं आशीर्वाद से प.पू. उपाध्याय प्रवर के सुशिष्य तपस्वीरत्न पूज्य मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म. आदि ठाणा, पू. मोहनलालली म. (खरतरगच्छ) समुदाय के पू. राजेन्द्रमुनिजी म. के शिष्य पू. विनयमुनिजी म. एवं खानदेश शिरोमणि पू. साध्वीवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू.साध्वी श्री डॉ. लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. कुशलरंजनाश्रीजी म. , पू. समदर्शिताश्रीजी म. एवं तपागच्छ, अचलगच्छ, पार्श्वचंद्रगच्छ, त्रिस्तुतिक आदि के अनेक साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में श्री शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना नगरी में श्रीमती कुसुमदेवी लखपतराजजी सिंघवी की सुपुत्री कुमारी अक्षिता (उम्र 6 वर्ष) की भागवती दिक्षा ता. 25 अप्रेल 2014, शुक्रवार, वैशाख वदि 11 के शुभ मुहुर्त्त में त्रि-दिवसीय महोत्सव के साथ सम्पन्न हुई।

नूतन बाल दीक्षिता का नाम साध्वी प्राज्ञपूर्णा श्रीजी म. रखा गया जो पू. शान्तमूर्ति साध्वी श्री महेन्द्रप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णा श्रीजी म. की शिष्या बनी।

इस दीक्षा अवसर पर पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म. ने बाल दीक्षा की महत्वता समझा कर बाल-दीक्षा का इतिहास बताया और आशीर्वचन दिया। पू. विनयमूनिजी म. ने भी नूतन बाल दीक्षिता को आशीर्वचन दिये। पू. खानदेश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. संयम जीवन की महिमा करते हुये कहा कि आज खरतरगच्छ गौरान्वीत हुआ है और नूतन बाल दीक्षिता की

खूब-खूब अनुमोदना की। पू. डॉ. लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ने अपनी नूतन बाल शिष्या को आर्शीवचन देते हुए कहा कि संयम जीवन की खुब-खुब आराधना-साधना करके जिनशासन एवं गच्छ का नाम गौरान्वित करो तथा शासन की खूब-खूब प्रभावना हो वैसा तप-त्याग करो।

ता. 24 अप्रैल को वर्षीदान वरघोड़े में कुमारी अक्षिता को इतनी छोटी सी उम्र में वर्षीदान देने का जो उमंग था वो देखने के लिए पालिताना नगर में साधु-साध्वी भगवंत एवं यात्रिक की भीड़ एकत्रित हो गई। विदाई समारोह-बहुमान कार्यक्रम में कुमारी अक्षिता ने इतनी छोटी सी उम्र में अपने भाषण में जो वक्तव्य दिया उससे उपस्थित सभी महानुभावों की आंखे नम हो गई। सभी मेहमानों ने कुमारी अक्षिता का विदाई बहुमान करके भारी हृदय से बड़े हर्षोल्लास के साथ सांसारिक जीवन से विदाई दी एवं संयम जीवन के महाप्रयाण के लिये आर्शीवाद दिया।

इस दीक्षा महोत्सव प्रसंग पर सूरत, जोधपुर, अहमदाबाद, बरोड़ा, पूना, इन्दौर, मुम्बई, बैंगलोर, चैन्नई, बीकानेर, भिवंड़ी, बाड़मेर, जयपुर आदि जगह से मेहमान पधारे थे।

दीक्षा महोत्सव की व्यवस्था के लिए श्री जिनदत्तसूरि मंडल, सूरत के युवानों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। प.पू. डॉ. लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. के आशीर्वाद एवं एवं दीक्षा महोत्सव समिति द्वारा मंडल का अभिनंदन किया गया।

प्रेषक : अल्पेश छाजेड़

दीक्षा अनुमोदन कर्त्ता दीक्षा महोत्सव समिति

समाचार दर्शन

त्रिदिवसीय जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

शहादा-सुघोषाघंट मंदिर दादावाड़ी के प्रांगण में पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मयंक प्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पू. समयप्रभसागरजी म.सा., पू. विरक्तप्रभसागरजी म., पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में जीवन निर्माण शिविर संपन्न हुआ।

शिविर का कुशल संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागर जी म.सा. ने किया। इस शिविर में कुल 195 शिविरार्थियों ने भाग लिया। जिसमें 124 पुरुषवर्गीय एवं 71 स्त्रीवर्गीय थे।

प्रतिदिन पांच कालांश लिये गये जिसे प्रात: 6.30 से 7.30 पर्यन्त योग-प्राणायाम-ध्यान साधना, 9.30 से 11 बजे तक चारित्र-जीवन निर्माण की कलाओं पर हृदयग्राही प्रवचन, 1.30 से 3.00 बजे तक तत्वज्ञान विकास, 3.30 से 5 बजे तक विविध प्रतियोगिताएँ, रात्रि में 8.30 से 9.30 पर्यन्त जिज्ञासा-समाधान ।

पूज्य मुनिश्री ने शिविर में योग साधना पर बल देते हुए कहा- आज व्यक्ति 24 घण्टे शरीर से काम लेता है पर उसकी सुरक्षा, ऊर्जस्विता के लिये उसके पास 24 मिनट भी नहीं है। योग शरीर को चार्ज करता है, निरोगी बनाता है पर स्वस्थता के इस प्रयोग का उपयोग साधना, आराधना एवं उपासना के लिये करना है, न कि भोगोपभोग में अभिवृद्धि के लिये।

चारित्र निर्माण के कालांश में जागरण, चरण-स्पर्श, भोजन, न्याय का धन, मन की शांति, मधुर वाणी के मधुर परिणाम, विनम्रता की पगडंडी, व्यसनों से मुक्ति की युक्ति, सत्य की सीख आदि विषयों पर मननीय प्रवचन हुए।

मुनिश्री ने न्याय के धन पर जोर देते हुए कहा- अन्याय के 500 रुपये, 5 लाख रुपये लेकर जाता है। व्यापार में प्रामाणिकता श्रीमद् राजचन्द्र जैसी हो कि हजारों का मुनाफा मुझे किसी भी व्यक्ति के आंसूओं के बल पर मंजूर नहीं।

उन्होंने बाजार के अशुद्ध आहार, रात्रिभोजन, कंदमूल आदि के त्याग पर ज्यादा जोर दिया। शरीर किराये का मकान है, उसका किराया भोजन है और मकान का किराया जितना कम हो, उतना ही अच्छा।

ध्यान की आवश्यकता पर जोर देते हुए मुनिवर्य ने कहा कि सारी मानसिक बीमारियों का ईलाज ध्यान-साधना पद्धति में है, ध्यान से नकारात्मक सोच से मुक्ति पायी जा सकती है, विश्व मैत्री का विकास किया जा सकता है, अहंकार के रोगाणुओं को नष्ट कर सकते है, प्रसन्नता, आनंद और समाधि के द्वार की चाबी एक मात्र ध्यान है। यदि मेडिसीन से बचना है तो मेडिटेशन को अपनाना नितांत जरूरी है। उन्होंने प्रेम साधना, सकारात्मक चिन्तन आदि के ध्यान

करवाये।

तत्वज्ञान की क्लास में छह आवश्यक, रत्नत्रयी, तत्त्वत्रयी, जीवतत्त्व, कषाय, संज्ञा, मंदिर विधि विधान आदि का ज्ञान दिया गया। 9 मई को पर्यावरण समस्या के समाधान के संदर्भ में जैन धर्म की प्रासंगिकता विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पन्द्रह शिविरार्थियों ने भाग लिया। इसमें प्रथम स्थान धीरज नाहटा-शहादा, द्वितीय स्थान कुणाल पारख-तलोदा एवं तृतीय स्थान स्वीटी बोथरा-शहादा ने प्राप्त किया।

10 मई को स्तवन प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें लगभग चालीस शिविरार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। प्रथम तीन स्थान क्रमश: राजुल नाहटा, पूजा गोलेछा, स्वीटी बोथरा (शहादा) ने प्राप्त किये।

वन मिनट क्वीज में खमासमण, तीर्थनाम लेखन आदि आयोजित हुए।

11 मई को समस्त शिर्विरार्थियों द्वारा परीक्षा दी गयी जिसमें प्रथम तीन स्थान प्रभात मालू-अहमदाबाद, मनीषा खीवंसरा-शहादा, सचिन भंसाली-खेतिया ने प्राप्त किये। समस्त प्रतियोगिता विजेताओं का बहुमान किया गया।

इसी दिन शिविर समापन समारोह आयोजित हुआ जिसका संचालन सौ. स्मिता जैन एडवोकेट ने किया। शशांत छाजेड़-धूले, मनाली बैद-इन्दौर, मीना बैद-इन्दौर, यश चौपड़ा, सरोज छाजेड़-धूले ने अपने वक्तव्य में शिविर की अनिवार्यता एवं मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

शिविर में शहादा, खापर, अक्कलकुवा, तलोदा, वाण्याविहिर, खेतिया, बलवाड़ी, इन्दौर, मालेगांव, चालीस गांव, नाशिक, धूले, सारंगखेड़ा, निजर, अहमदाबाद, बड़ौदा, राजनांदगांव, मोलगी आदि के शिविरार्थी सम्मिलित हुए जिनका श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ शहादा की ओर से भावभरा सम्मान कर बहुमान में मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. द्वारा आलेखित 'जैन जीवन शैली' पुस्तक प्रदान की गयी।

शिविर को सफल बनाने में श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ-शहादा एवं श्री जैन श्वे. मू. पू. युवा संघ की परिपूर्ण मेहनत रही।

समाचार दर्शन

चौहटन में चातुर्मास

पूज्य गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. सा. एवं पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. का आगामी चातुर्मास बाडमेर जिले के चौहटन नगर में निश्चित किया गया है।

श्री जैन श्वेताम्बर संघ चौहटन ने डुठारिया में बिराजमान पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से चौहटन नगर में चातुर्मास कराने की भावभरी विनंती की, जिसे स्वीकार कर चातुर्मास की जय बोलाई गई।

पूज्य मुनिश्री का प्रभावक चातुर्मास चौहटन में इससे पूर्व सन् 2008 में हुआ था। चौहटन श्री संघ में चातुर्मास निर्णय से अत्यन्त आनंद व उल्लास छा गया है तथा चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाने की तैयारियों में जुट गया है।

जोधपुर में चातुर्मास

पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. पू. दीपमालाश्रीजी म.सा. ठाणा 2 का आगामी चातुर्मास जोधपुर के गुलाबनगर में निश्चित किया गया है।

गुलाबनगर संघ ने डुठारिया नगर में बिराजमान पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से चातुर्मास कराने की भावभीनी विनंती की थी। गुलाबनगर संघ की विशेषता है कि वहाँ सभी गच्छ सम्मिलित है।

पूजनीया साध्वीश्री का गत चातुर्मास जोधपुर में ही क्रिया भवन में संपन्न हुआ था। इस वर्ष भी क्रिया भवन तपागच्छ संघ की विनंती थी।

प्यासा कंठ मीठा पानी का विमोचन

मंदाणा नगर प्रतिष्ठा महोत्सव 14 मई 2014 के दिन पू.उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा आलेखित प्यासा कण्ठ मीठा पानी का विमोचन किया गया।

यह प्रश्नोत्तर ग्रन्थ अपने आपमें समाधान का खजाना है। 660 पृष्ठों से संयुत इस महाग्रन्थ में 17000 प्रश्नोत्तर है। तृतीय संस्करण का प्रकाशन इस ग्रन्थ की उपयोगिता का पुष्ट प्रमाण है।

प्रस्तुत महाग्रन्थ का द्वितीय खण्ड भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है जिसें लगभग 15000 प्रश्नोत्तर एवं विविध विधाएं होगी। इसका विमोचन पूना निवासी श्री महावीरचंद, बालचंद, राजेन्द्र कुमार, उत्तमचंद बांठिया परिवार द्वारा किया गया।

अहमदाबाद नीलकंठ पार्क में प्रतिष्ठा संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में अहमदाबाद नगर के शाहीबाग क्षेत्र में नीलकंठ पार्क स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर में अनंत लब्धि निधान प्रथम गणधर गुरू गौतमस्वामी की प्रतिष्ठा ता. 25 मई 2014 रविवार को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा वि. 2067 द्वि. वैशाख सुदि 10 को पूज्य गुरुदेवश्री के करकमलों द्वारा ही संपन्न हुई थी।

समारोह का प्रारंभ ता. 23 मई को पूज्य गुरुदेवश्री, पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि साधु साध्वी मंडल के प्रवेश के साथ हुआ। कुंभ स्थापना, दीपस्थापना आदि विधि विधान संपन्न हुए। इस अवसर पर पूज्यश्री ने श्री गौतमस्वामी के जीवन की विशिष्टताओं का वर्णन करते हुए शिष्यत्व की व्याख्या की।

ता. 24 मई को भव्य वरघोडे का आयोजन हुआ। वरघोडे के पश्चात् पूज्यश्री का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। ता. 25 को मंत्रोच्चारणों के साथ श्री गौतमस्वामी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। ध्वजा का लाभ संघवी शा. वंसराजजी टोमचंदजी मंडोवरा परिवार सिणधरी वालों ने लिया। स्वर्ण कलश का लाभ श्री रंगराजजी अरविन्द कुमारजी पुष्पराजजी चौपडा परिवार पचपदरा वालों ने तथा गौतमस्वामी बिराजमान का लाभ समदडी निवासी श्री पुखराजजी सुरेशकुमारजी बागरेचा परिवार ने लिया।

जोधपुर में प्रतिष्ठा

पूर्ण जीर्णोद्धार कराये गये श्री शांतिनाथ जिन मंदिर की पुनर्प्रतिष्ठा श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जोधपुर के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में 7 जून को संपन्न होगी। समारोह का प्रारंभ 5 जून को कुंभस्थापना आदि विधानों के साथ होगा। 7 जून को प्रात: शुभ मुहूर्त्त में प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

बल्लारी में दादावाडी का शिलान्यास 16 जून को

पूजनीया मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में बल्लारी में श्री सीमंधरस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी का खात मुहूर्त्त शिलान्यास आगामी 16 जून 2014 को संपन्न होगा।

इस मंदिर दादावाडी हेतु विशाल भूखण्ड मोकलसर निवासी श्री पृथ्वीराजजी बाफना परिवार द्वारा अर्पण किया गया है। इस मंदिर दादावाडी के निर्माण के लिये विधिवत् ट्रस्ट बनाया गया है।

लौद्रवातीर्थ में प्राचीन दादावाड़ी का खात मुहूर्त्त शिलान्यास 8 जुन को

लौद्रवा तीर्थ में प. पू. बहिन महाराज डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. द्वारा उत्थापन की हुई दादावाड़ी का खात्त मुहूर्त्त एवं शिलान्यास 8 जुन 2014 को सम्पन्न होगा। इस दादावाडी का जिर्णोद्धार जिनदत्त सूरि मण्डल चैन्नई द्वारा करया जायेगा।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. मालेगांव, नाशिक होते हुए भिवंडी भायंदर पधार रहे हैं। वहाँ से वे नवसारी की ओर चातुर्मास हेतु विहार करेंगे। उनका चातुर्मास प्रवेश 30 जून 2014 को होगा।

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. डुठारिया प्रतिष्ठा के बाद विहार कर पाली होते हुए जोधपुर पधारे हैं। वहाँ श्री शांतिनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा करवाकर बाडमेर होते हुए चौहटन की ओर विहार करेंगे। उनका चातुर्मास प्रवेश ता. 7 जुलाई को होगा।

पूज्य मुनि श्री कुशलमुनिजी म. आदि ठाणा 4 ने पाली दीक्षा के पश्चात् अहमदाबाद की ओर विहार किया है। उनका चातुर्मास हेतु प्रवेश 29 जून 2014 को होगा।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 5 मंदाना प्रतिष्ठा के पश्चात् सारंगखेडा, दोंडाइचा, धूले होते हुए मालेगांव पधारे हैं। वहाँ से वे शिरडी, अहमदनगर होते हुए इचलकरंजी की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा 10 रिजुबालिका की प्रतिष्ठा के बाद पावापुरी की ओर चातुर्मास हेतु विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म.सा. मननप्रभसागरजी म. ने अहमदाबाद से पालीताना की ओर विहार किया है।

पूजनीया साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का जोधपुर के बाडमेर जैन श्री संघ में चातुर्मास होगा। इस हेतु उनका प्रवेश 6 जुलाई को संपन्न होगा।

पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा शाजापुर की प्रतिष्ठा के बाद विहार कर केकडी पधारे हैं। वहाँ उनकी पावन निश्रा में पंच दिवसीय बालक बालिका एवं श्राविका शिविर का आयोजन किया गया। वहाँ से विहार कर मालपुरा पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में 22 जून को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। इस मंदिर का जीर्णोद्धार श्रीमाल सभा, जयपुर द्वारा करवाया गया है। पूजनीया साध्वीश्री का जयपुर जवाहरनगर में चातुर्मास प्रवेश 29 जून को होगा।

पूजनीया साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा विहार कर पालनपुर होते हुए अहमदाबाद पधारे हैं। उनका चातुर्मास जन्मभूमि पादरा में होगा।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 17 मई से 26 मई तक आगरा बिराजे। वहाँ प्रतिदिन प्रवचन, आराधना आदि द्वारा शासन प्रभावना हुई। वहाँ से 27 मई को विहार किया है। वे हस्तिनापुर होते हुए दिल्ली पधारेंगे। दिल्ली में चातुर्मास हेतु 29 जून को प्रवेश होगा।

पूजनीया साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा हुबली बिराज रहे हैं। उनकी पावन निश्रा में 16 जून को बल्लारी में जिन मंदिर दादावाडी का खात मुहूर्त्त व शिलान्यास होगा। उनका चातुर्मास हुबली में होगा। चातुर्मास प्रवेश 29 जून को होगा।

पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास बीजापुर होगा। उनका चातुर्मास प्रवेश 7 जुलाई को होगा।

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. सा. ने चेन्नई से नेल्लूर होते हुए बैंगलोर की ओर विहार किया है। वे बैंगलोर के उपनगरों में भ्रमण कर ता. 29 जून को चातुर्मास हेतु बसवनगुडी श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी में प्रवेश करेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. सा., पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म.सा. , पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने अहमदाबाद से सूरत की ओर विहार किया है। वहाँ ता. 4 जून को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे। वहाँ से इचलकरंजी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास गदग होगा। उनका चातुर्मास प्रवेश 30 जून को होगा।

पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने 26 मई को अहमदाबाद से शंखेश्वर तीर्थ की ओर विहार किया है। वे वहाँ से सांचोर होते हुए बाडमेर की ओर विहार करेंगे। वहाँ वे चातुर्मास हेतु ता. 30 जून 2014 को प्रवेश करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा डुठारिया प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् पाली, रोहट, कांकाणी होते हुए जोधपुर पधारे हैं। जोधपुर गुलाबनगर में चातुर्मास हेतु प्रवेश 29 जून 2014 को करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 का जोधपुर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के तहत ओसवाल कम्युनिटि हॉल में चातुर्मास प्रवेश 7 जुलाई 2014 को होगा।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री संयमज्योतिश्रीजी म. सा. का नागोर चातुर्मास हेतु प्रवेश 9 जुलाई 2014 को होगा।

परम पूज्य आस्था केन्द्र, वात्सल्य वारिधि, मरूधर मणि उपाध्याय भगवंत

गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

का 42 वां दीक्षा दिवस आषाढ वदि सप्तमी (7)

दिनांक 19 जून 2014

वंदनकर्त्ता

ललितकुमार, राजकुमार, कैलाशकुमार, गौतमचन्द

बेटा-पोता भंवरलालजी धरमचन्दजी संकलेचा

चैन्नई-पादरु

जहाज मंदिर पहेली-95 का सही उत्तर

प्रश्नों के उत्तर- 1 नाम 2 वर्षावास 3 उवज्झाय 4 संवर 5 द्रव्य 6 तिर्यंच 7 तप 8 सत्यकी 9 यति 10 रतिसार 11 क्षायिक 12 लयन 13 चक्रायुध 14 किचक 15 महावीर 16 नव 17 नीलांजना 18 रति 19 भरत 20 कल्प सूत्र 21 त्रस 22 भामंडल 23 तिर्यंच 24 लज्जा 25 रत्नप्रभा 26 धर्मलाभ 27 कपिल 28 चन्द्र 28 जालिनी 30 यक्षा।

इनकी अन्ताक्षरी इस प्रकार बनेगी-

उवज्झाय-यक्षा-क्षायिक-कपिल-लज्जा-जालिनी-नीलांजना-नाम-महावीर-रत्नप्रभा-भामंडल-लयन-नव-वर्षावास -सत्यकि-किचक-कल्पसूत्र-त्रस-संवर-रतिसार-रति-तिर्यंच-चन्द्र-द्रव्य-यति-तिर्यंच-चक्रायुध-धर्मलाभ-भरत-तप

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- माना चतुरमुथा - खरियार रोड़ ।

छह प्रेरणा पुरस्कार- रमेश प्रजापत-जहाज मंदिर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, प्रमिला बेंगानी-भीनासर, शशि पींचा-धमंतरी, आदेश जैन-तलोदा, चित्रा झाबक-बड़ौदा।

इनके उत्तर पत्र सही थे- साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी, साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी सोहनबेन झाबक-बड़ौदा, संगीता गोलछा-कोण्डा गाँव, प्रज्ञा जैन-रायपुर, प्रेम दुगड़-जयपुर, मांगीलाल जैन-तलोदा, डॉ. सुनीता जैन-जयपुर, सुचित्रा भंसाली-नोयड़ा, ममता गोलछा-कोण्डा गांव, सरोन गोलछा-राजनांद गांव, मनीषा लूणिया-ऊटी, सरला गोलछा-लालबर्रा।

इनके उत्तर पत्र आंशिक रूप से त्रुटिपूर्ण थे- सुशीला कोचर-अक्कलकुवा, लीला भूरट-होस्पेट।

पहेली-९४ के विलम्ब से प्राप्त उत्तर- सविता जैन-मुम्बई, चित्रा झाबक-बड़ौदा, भाग्यवंती तातेड़-नंदुरबार, विनीता बच्छावत-फलोदी, जयश्री कोठारी-भाईंदर, तारा कोठारी-भाईंदर, नरेन्द्र कोचर-भाईंदर, चन्द्रा कोचर-भाईंदर, किरण मेहता-भाईन्दर, पिस्ता गोलछा-जयपुर, डॉ. सुनीता जैन-जयपुर, चंद्रसिंह जैन-उदयपुर, सुशीला कोचर अक्कलकुला, किरण बैद मुथा-रायपुर, माना चतुरमुथा-खडियार रोड़।

जहाज मंदिर पहेली-96 का सही उत्तर

1. भव्य जीव 2. गणितानुयोग 3. वाचना 4. नमुत्थुणं 5. मदालसा 6. हास्य 7. वीतराग स्तोत्र 8. रसनेन्द्रिय 9. भगवती सूत्र 10. गजसार गणि 11. वासुदेव 12. नन्दीवर्धन 13. महाबल 14. हारित/हार्ययायन 15. वीररस 16. रजोहरण 17. भरणी 18. गणधर 19. वाराणसी 20. नग्गति 21. मदनपाल 22. हाथ में हथकड़ी हो 23. वीरभयपत्तन 24. रत्नावली 25. भद्रिका/भद्दिलपुर 26. गच्छाचार पयन्ना 27. वदिदेवसूरि 28. नंदमणियार 29 महाकाल/महाघोष 30. हाथी 31. वीर स्तव 32. रथयात्रा 33. भ्रमर 34. गणिपिटक 35. वायुभूति 36. नयसार 37. महास्वप्न 38. हालिक 39. वीणा, 40. रत्नाकरसूरि

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- सुचित्रा भंसाली-नोयडा ।

छह प्रेरणा पुरस्कार- डॉ. सुनिता जैन-जयपुर, प्रज्ञा जैन-रायपुर, इन्दु सुराणा-जहाजपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, कणिका जैन-बूंदी, फीणीबेन बाफना-कोट्टूर ।

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 98

प्रस्तुत वर्गाकार बॉक्स में विभिन्न 15 पर्वों एवं पर्व तिथियों के नाम छिपे हुए हैं, उन्हें पृकट करके अंकित करें उदाहरणार्थ- **संवत्सरी** को बोल्ड किया गया है। शेष-चौदह को प्रकट कीजिये।

व	ह	न	सि	द	म	ज	ही	कु	ल	म	रू	वा	द
ल	स	य	ध	धा	आ	ट	प	स्य	सु	घं	क	म	त
ध	आ	वा	प	या	ना	र्यु	ज	ल्प	धो	ण	वा	ला	स्सु
अ	सो	द	फा	ला	ष	ढ	क	स्स	ल्या	लू	क्रि	श्रा	श्य
इ	ज	ज्ञ	बा	ण	ज्ञा	त	ल्य	क	मे	भ	य	व	ना
क्र	ओ	ध	मा	द	क्षा	थ	न्म	भ	रू	म	ग	ण	प
शा	ली	खा	च	दी	ध	ज	वी	षा	ते	ट	अ	सु	स्था
द	भ	ग	धु	प्रा	र	सं	श्व	य	र	ढ	क्ष	दि	न
मा	क	ऋ	झ	वी	द	नु	व	र	स	म	य	पं	स
भ	ण	क	ह्रा	या	भा	फा	मा	त्स	ल	य	तृ	च	शा
ल	ल्य	म	द	ग	री	ल्गु	हि	भि	री	क	ती	मी	म
या	क	ला	म	म	भी	न	म	नि	भ्रा	मृ	या	द	चै
रो	न्म	नु	मी	च	धी	फे	चै	त्र	ओ	ली	बा	न	त्री
भू	ज	श्या	च	कु	हा	री	ण	ना	दा	य	ला	च	पू
वी	थ	धी	पं	शा	ल	न्य	ढ	पा	नी	द	श	छ	र्णि
ग्य	ना	प्र	न	प्र	क	हा	लो	का	र्ति	क	श	र्णि	मा
ज्ञ	र्श्व	द	ज्ञा	भ्र	त्रा	सा	हा	वं	जा	गृ	ति	दि	व
नु	पा	ग	क्ष	कु	क्षा	प	मौ	न	ए	का	द	शी	स

पर्वों के नाम

1. संवत्सरी
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....
7. .....
8. .....
9. .....
10. .....
11. .....
12. .....
13. .....
14. .....
15. .....

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 जुलाई तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अगस्त में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

श्री धनराज-सौ. सुनीतादेवी, उज्ज्वल, गीतांजलि प्रांजल कोचर पुत्र श्री हीरालालजी सोनीबाई कोचर (फलोदी-तलोदा)

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन [ ][ ][ ][ ][ ][ ] जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

इनके उत्तर पत्र त्रुटिरहित थे-अमीझराश्रीजी-पालीताणा, विशालप्रभाश्रीजी-पालीताणा, दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी- अहमदाबाद, मनीला पारख-जयपुर, सरला गोलछा-लालबर्रा, सेफाली जैन-बूंदी, सोनाक्षी सुराणा-जहाजपुर, राजेन्द्र सुराणा-जहाजपुर, चन्द्रप्रकाश जैन-जयपुर, विजय संकलेचा-मालपुरा, सीमा जैन-जयपुर, सरोज गोलछा-राजनांदगांव, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, मनीषा लूणिया-ऊटी, सारिका जैन-जयपुर, प्रेम दुगड़-जयपुर, पिस्ता गोलछा-जयपुर, सोहन झाबक-बड़ौदा, भूरचंद मालू-जोधपुर, वीणा सिंधी-जयपुर, दीपिका धूपिया-जयपुर, किरण बैदमुथा-रायपुर, विनीता बच्छावत-फलौदी, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, सम्यक् बरडिया-कोण्डा गांव, मधुखवाड़-मदनगंज, सरसलता जैन-दिल्ली, सरला भंसाली-खेतिया, आशा छाजेड़-जोधपुर, मंगला भंसाली-शहादा, भंवरी देवी गोलछा-ऊंटी, रमेश प्रजापत-माण्डवला, मनोहर झाबख-कोटा।

इनके उत्तर पत्र आंशिक रूप से त्रुटिपूर्ण थे- सुशीला कोचर-अक्कलकुवा, टीना जैन-अक्कलकुवा, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, संतोष गुलेच्छा-पनरूटी, सुनील कांवडिया-भीलवाड़ा, सुशीला भण्डारी-कोटा, मनोहरी बेन बाफना-नंदुरबार, समता कांकरिया-ब्यावर, बाबूलाल भूरट-होस्पेट, मनीष बाफना-नंदुरबार, कुसुम बेगानी-रायपुर, संगीता गोलछा-कोण्डागांव, शकुंतला कांकरिया-हैदाबाद, नमिता जैन-उदयपुर, शोभा वैद-पनरूटी, निध्यान गुलेच्छा-जोधपुर, मधु जैन-ऊटी, बसंती वैद-कुरिंजीपाड़ी, संतोष भण्डारी-कोटा, अभिषेक गुलेच्छा-बड़ौदा, कमलेश भण्डारी-जयपुर, स्नेहलता चौरड़िया-जयपुर, जयश्री कोठारी-ऊटी, पूजन भंसाली-खेतिया, विमला गोखरू-अजमेर, प्रियंका बाफना-बल्लारी, सज्जन छाजेड़-कोटा, साक्षी धारीवाल-कोट्टूर, पुष्पा धारीवाल-कोट्टूर, अशोक जैन-हैदराबाद, माना चतुरमुथा-खरियार रोड, कुशाल पगारिया-रायपुर, तारा कवाड़-सारंगखेड़ा।

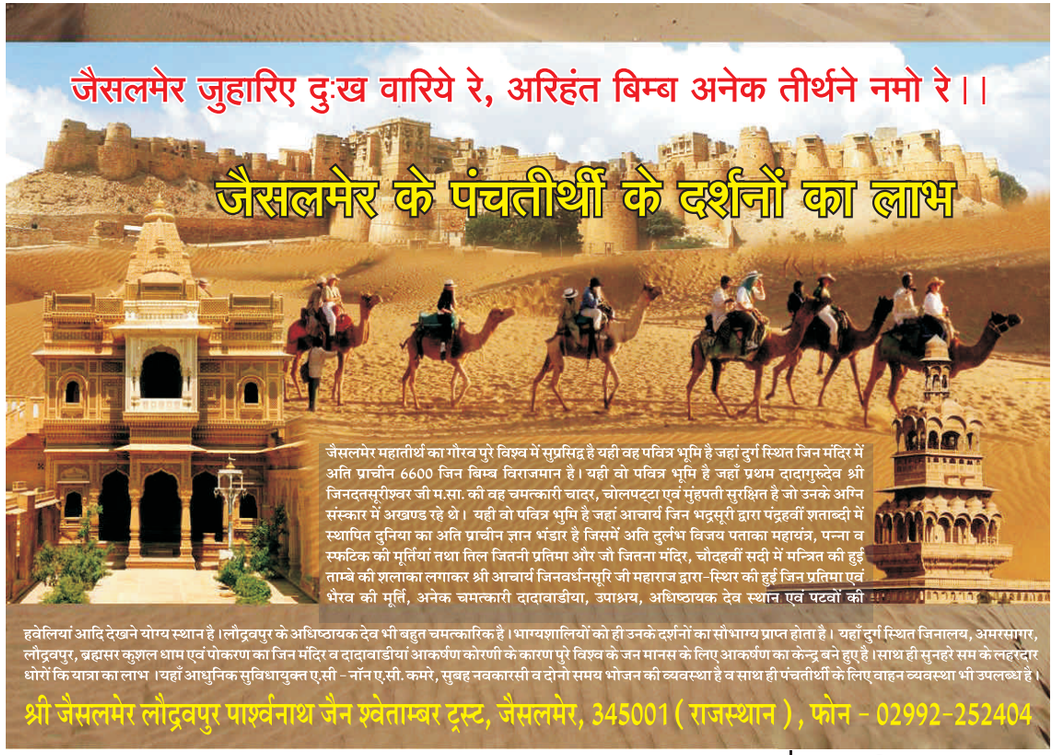

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

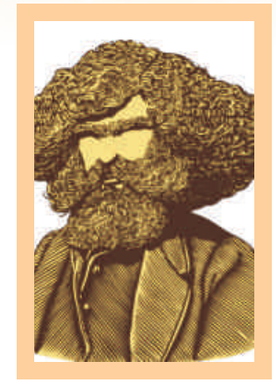

जटाशंकर दुखी था। क्योंकि उसके पुत्र को किसी भयंकर अपराध के लिये 10 साल बामुशक्कत कैद की सजा हुई थी। उसका मन लगता न था। वह बार बार सोचा करता था कि कैसा पुत्र मुझे मिला! समाज में नाम खराब कर दिया। नौ साल बाद वह घर पर बैठा ही था कि उसका पुत्र जेल से बाहर आ गया। पिता को पुत्र से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

उसके मन में प्रश्न भी पैदा हुआ कि सजा तो पूरी हुई नहीं है। फिर यह बाहर कैसे आ गया। उसकी आँखों से हर्ष मिश्रित आश्चर्य टपकने लगा।

पुत्र ने बताया- पिताजी! मेरे अच्छे व्यवहार के कारण मेरी एक साल की सजा माफ कर दी गई है।

सुनकर पिता जटाशंकर बहुत आनंदित हुआ। उसने आकाश की ओर मुख करके हाथ जोडे और श्रद्धा भरकर परमात्मा से प्रार्थना करने लगा- हे भगवान्! तेरा लाख-लाख शुक्र है। ऐसा नेक चाल चलन वाला पुत्र सबको देना। अगले भव में भी मुझे ऐसा ही नेक नियत वाला बेटा देना।

दस साल की सजा जिस अपराध के कारण हुई, उसे भूल जाते हैं। और सामान्य अच्छे व्यवहार के कारण एक साल की सजा माफ कर दी जाती है, तो उसे जान कर प्रसन्नता से भर जाते हैं।

हमारे द्वारा भी कोई छोटा-सा शुभ कार्य होता है तो हम अपनी ही पीठ थपथपाने लगते हैं। उससे पूर्व अपने किये सारे अशुभ कार्य भुला देते हैं।

पर छोटे-से अच्छे कार्य से कर्म-बंधन के छुटकारे से मुक्ति नहीं मिल सकती। उसके लिये हमें समस्त कर्मों का क्षय करना होगा। और उसके लिये प्रबल पुरूषार्थ करना होगा।

जन-जन तक पहुंचे मणि हृदय की वाणी

सौ. शशि मोतीचंद गुलेच्छा

आपकी दुआओं ने जीने का सहारा दिया
मुरझायी बहिना को गुलशन प्यारा दिया
प्रभुता ने मंदिर और मुक्ति-द्वारा दिया
कुदरत ने चांद को ध्रुव तारा दिया।।
पावन ज्योत में पूरे हो मंजिलों के दाने
कुदरत के उपहार को हर पल पाले
आपने कोई बंटवारा नहीं किया
सबको एक-सा रोशनी का सवेरा दिया।

आपके आशीष की दिल दुआ करूँ
अश्कों को पोंछ मुस्कुरा के जिया करूँ
धूप और छांव की लुकाछिपी है जिन्दगी
मणि बनकर दिल रोशन दिया करूँ।।
आपके हर श्वास की सांझीदार बन जाऊँ
धड़कनों में आप सम हर दर्द पिया करूं।
ठोकर लग कर गिरूँ कोई दर्द नहीं
चरणों में रहने का हौसला जरूर देना

तूफानों में उजड़ जाऊँ परवाह नहीं
दिल में बसने का घौंसला जरूर देना।।
मेरी नादानी को भूल।
तेरे आशीष को याद रखना
आँखें बंद हो जाए कोई गिला नहीं
जिन्दा रहने का जलजला जरूर देना।

श्री बालोतरा सम्मेरशिखरजी जैन तीर्थ यात्रा संघ

21 दिवसीय भव्य तीर्थ यात्रा का तीसरा आयोजन

प.पू. आचार्य देव
श्रीमद् विजय कीर्तिचन्द्र सूरिश्वरजी म.सा.

आयोजक

श्री जैन विकास समिति

हैप्पी पोईन्ट, खेड़ रोड़, बालोतरा–344022 (राज.)

प्रस्तावित यात्रा

हस्तिनापुर, हरिद्वार, पावापुरी, राजगृही, कुण्डलपुर, गुणियाजी, सम्मेतशिखरजी, जगन्नाथपुरी, वेल्लूर (गोल्डन टेम्पल) ऊटी, मैसुर, कौशलपुर (गोल्डन टेम्पल), बान्दीपुर नेशनल पार्क, बाहूबली, धर्मस्थली, सिणगेरी, मुडबिद्री, कुम्भोजगिरी, शिरडी, धर्मचक्र, सूरत, मोहनखेड़ा आदि तीर्थ

शुभ प्रस्थान : दिनांक 06 सितम्बर 2014

शुभ आगमन : दिनांक 27 सितम्बर 2014

रामचन्द्र छाजेड़
अध्यक्ष
मो. 9414108355

मदनराज चौपड़ा
उपाध्यक्ष
मो. 9414108192

मूलचन्द 'संगम'
उपाध्यक्ष
मो. 9414341332

जवेरीलाल मेहता
मंत्री
मो. 9414270948

गौतमचन्द श्रीश्रीमाल
कोषाध्यक्ष
मो. 9414122328

पी.राजेश जैन
संयोजक
मो. 9414107888

गणपत भण्डारी (सूरत)
संयोजक
मो. 9374781000

पृथ्वीराज चौपड़ा
यात्रा संयोजक
मो. 9414107879

:: टिकट बुकिंग के लिये सम्पर्क करें ::

बाड़मेर	चौहटन	पाली मारवाड़	सूरत	अहमदाबाद	जोधपुर
सम्पतराज भुरिंग	मदनलाल बकीधर छाजेड़	खेतमल बडेरा 09214420354	गणपत भण्डारी	ललित चौपड़ा	गौतमचन्द सिंघवी (ट्रस्टी भैरू बाग तीर्थ)
09414106421	09461322022	अशोक मण्डोत 09351377981	09374781000	09925030288	09829347417

यात्रा के इच्छुक महानुभाव अतिशीघ्र अपनी टिकिट बुकिंग करवा देवे। स्थान सिमित है।

- 94135 26581

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

।। श्री शांतिनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरूभ्यो नमः ।।
पू. गणनायक श्री सुखसागर-भगवान-जिनहरि-जिनकांतिसागरसूरि गुरूभ्यो नमः

श्री चौहटन नगर की पावन धर्म धरा पर

भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश पर सकल श्री संघ को हार्दिक

दिव्य आशीष
प. पू. आचार्य भगवंत
श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.

आमंत्रण

आशीर्वाद प्रदाता
प. पू. मरूधर मणि
उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

मुनिराज श्री
मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.

वर्षावास निश्रा

प. पू. आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य-प्रशिष्य

मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.

मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.

मुनिराज श्री
मनीषप्रभसागरजी म.सा.

प्रवेश शुभ मुहूर्त्त

वि. सं. 2071 आषाढ़ सुदि 9, दिनांक : 7 जुलाई 2014, सोमवार

सकल श्री संघ से इस पावन अवसर पर पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

सम्पर्क सूत्र

डॉ. मोहनलाल डोसी	वगतावरमल सेठिया	हीरालाल धारीवाल
अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	सचिव
मो. 94141 06431	मो. 99836 04425	मो. 99247 45525

चातुर्मास स्थल
श्री शांतीनाथ जिनालय उपासरा
चौहटन जिला बाड़मेर
फोन : (02989) 286335

निवेदक : श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ चौहटन

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, सिवरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in www. jahajmandir.com www.jahajmandir.blogspot.in

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408